बादल और पतंग

सम्पादक राजेन्द्र उपाध्याय

शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए

कविता प्रकाशन

तेलीवाड़ा, बीकानेर-334005

बादल और पतंग

सम्पादक
राजेन्द्र उपाध्याय

शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर
के लिए
कविता प्रकाशन, तेलीवाड़ा
बीकानेर-334005

सम्पादक राजेन्द्र उपाध्याय
सस्करण 1992
आवरण मधु भास्कर
मूल्य तेरह रुपये
मुद्रक एम० एन० प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

BADAL AUR PATANGA
Edited by Rajendra Upadhyay
Price Rs 13,00

आमुख

रचना का जगत वास्तविक जगत का अग होते हुए भी इससे पृथक, निराला और समानान्तर होता है । रचना मे अनुभव का एक नया ससार सामने आता है और उन क्षणो को अद्वितीय बना देता है जिनमे रचना हो रही होती है । शब्दो की इस काया मे रक्त, रस, माँस और अस्थियाँ सब शब्दो मे ही समाई रहती हैं । शब्द से इतर कुछ न होकर भी बहुत कुछ होता है इनमे यानी परिवेश, परिस्थितियो और समय के बदलाव के साथ अर्थ की गहरी, अनसोची और नई से नई परते खुलने की सभावना बराबर बनी रहती है । जब लेखक की रचनात्मक सवेदना पाठक को भी उसी स्तर पर झकझोरने लगे और सवेदना के स्तर पर दोनो एकमेक हो जाएँ तो समझा जाना चाहिए कि रचना अपनी अर्थवत्ता को सिद्ध कर रही है ।

रचना के नाम पर लिखी जाने वाली सैकड़ो हजारो 'रचनाओं' मे से विरली ही समय की कसौटी पर खरी उतरती हैं । शेष या तो शब्दो की कसरत भर बनी रहती हैं या किसी अमर कृति के लिए उर्वरा जमीन तैयार करने मे खाद बनकर रह जाती हैं । अमर होने के लिए किसी कृति को समर्थ रचनाकार की साधना उसकी अनुभूति की गहराई और प्रामाणिकता, प्रस्तुति का कौशल और सवेदनात्मक आवेगो की पकड़ से जुड़ा होना आवश्यक है । इसीलिए कहते है कि रचना के क्षण विरले भी होते हैं और निराले भी ।

राजस्थान के सृजनशील शिक्षक साहित्यकार इन विरले और निराले क्षणा की पकड़ करने का प्रयास करते रहे हैं । इनमे से कुछेक शब्द शिल्पी एवम् कृतिकार ऐसे हैं जिन्हे देशव्यापी प्रतिष्ठा मिली है । इन लोगो ने शिक्षा विभाग के भी गौरव को बढ़ाया है । हमारे लिए रचना का यह ससार एक परम्परा है – आज से नही सन् 1967 से, जब हमने इस परिक्रमा को शुरू किया था ।

पूरे पच्चीस वर्षों की यानी एक चौथाई शताब्दी की साधना हमारे साथ है । इसे रजत-जयन्ती की सज्ञा से विभूपित करे न करे – यह बेमानी है लेकिन इतना सत्य अवश्य है कि् पूरे देश के शिक्षा विभागो मे केवल राजस्थान का शिक्षा विभाग ही इस प्रकार के अनुष्ठान को चला रहा है । देश भर के चर्चित साहित्यकारो समीक्षको और राजनेताओं ने इस तथ्य को स्वीकार किया है – उनकी यह मान्यता ही हमारी असली ताकत है ।

रचना की इस अविरल श्रृखला मे अब तक कुल 123 पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है और इस वर्ष की 6 पुस्तको को मिलाकर यह सख्या 129 तक पहुच

जाएगी। सख्या के गौरव से कही अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इन पुस्तको का सम्पादन देश के सुप्रसिद्ध, चर्चित और सर्वमान्य साहित्यकार करते रहे हैं। शिक्षा विभाग उन सबके प्रति आभारी है। इस वर्ष प्रकाशित होने वाली पुस्तको के नाम इस प्रकार है

1 रत्तघड़ी (कविता सकलन)	स मगलेश डबराल
2 गता जगी कथाएँ (कहानी सकलन)	स पद्मा सचदेव
3 प्रतिभा के पख (हिन्दी विविधा)	स क्षेमचद्र 'सुमन'
4 आखर येल (राजस्थानी विविधा)	स ओंकार श्री
5 शिक्षा समस्याएँ तथा सभावनाएं (शिक्षा साहित्य)	स राजेन्द्र पाल सिंह
6 बादल और पतग (बाल साहित्य)	स राजेन्द्र उपाध्याय

इस वर्ष हमने एक नया निर्णय लिया है। शिक्षक हो अथवा कर्मचारी – शिक्षा विभाग की कार्मिक सरचना मे दोनो का हाथ है अत इस वर्ष के सकलनो मे आपको सृजनशील शिक्षको और कर्मचारियो दोनी की रचनाओं का लाभ मिलेगा।

मुझे एक बात अपने रचनाकारो से कहनी है। यह सही है कि लब्ध-प्रतिष्ठ सम्पादको ने कुछ रचनाओं अथवा रचना अशा की सराहना की है तो कई जगह कमियाँ भी बताई है। सराहना जहाँ हम सुख देती है, वहा कमियाँ सुधार के अवसर प्रदान करती हैं। साहित्य की रचना करना भी एक शिक्षा कर्म है। साहित्य और शिक्षा को अलग-थलग नही किया जा सकता। दोनो का काम लोकमानस को परिष्कृत और सस्कारित करना है। दोना सत्य पथ के सहभागी हैं। दोनो एक ऐसा इसान गढ़ना चाहते है जो इन्सानियत की सही और सार्थक पहचान दे सके।

जिन लोगो की रचनाओं का इन सकलनो मे समावेश है, मै उन्हे बधाई देता हू। जिनकी रचनाएँ नही छप पाई है उनसे मेरा आग्रह है कि रचनाधारा से लगातार जुड़े रहे, लेखनी के पैनेपन को बनाये रखे और आगामी वर्ष के सकलनो के लिए अपनी श्रेष्ठतम और नवीनतम रचनाएँ दे। मैं इस वर्ष के सम्पादको और प्रकाशक बधुओं का हृदय से आभारी हू जिन्होने कम समय मे उत्कृष्ट सम्पादन एवम् प्रकाशन द्वारा विभाग के इस अनुष्ठान को सफल बनाने मे सहयोग दिया है।

शिक्षक दिवस 1992

मनोहर कांत कलोहिया

निदेशक,
प्राथमिक एव माध्यमिक शिक्षा,
राजस्थान, बीकानेर

संपादक की ओर से

वाल साहित्यकारो का, विशेपकर अध्यापक वाल साहित्यकारा का काम न कवत सत्साहित्य की रचना करना हे, वल्कि भावी पीढी को नई रचना क लिए प्रोत्साहित करना भी हे। अध्यापको का यह दायित्व हे कि वे वालको को सत्साहित्य का पाठ पढाए, सत्साहित्य की रचना के लिए भी प्रवृत्त करे, उन्ह दिशा निर्दश द उनम सस्कार डाले (ओर सस्कार के विना शिक्षा हे क्या ?), विद्यार्थिया क मन-मस्तिप्क पर जमी हुई अपसस्कृति की धूल को झाडकर उनकी दवी-घुटी रचनात्मक आग खाज निकाले।

गाधीजी ने अध्यापको के कई कर्त्तव्य वताए हे—उनमे एक यह भी हे कि अध्यापक वच्चो के कपडे धो दें, उनके नाखून काट दे। आज यह सभव नही, ता भी प्रतीकात्मक रूप से ही सही, हम उनके मन-मस्तिप्क पर जमी कालिख तो छुटा ही सकते हे।

सपादन के दौरान वाल साहित्य से सम्वन्धित अनेक रचनाओ से सामना हुआ। कुछ लेखक तो हर साल हर किताव मे छपते हे। क्या ऐसा प्रतिवध नही लगाया जा सकता कि एक-एक साल छोडकर अध्यापको की रचनाए छापी जाए—जिसकी रचना इस वार छपी हो, उसे अगले साल न छापा जाए, जिससे नई रचनाशीलता को सुअवसर मिलेगा।

मन मे कई वार विचार आया कि हम इतनी अधिक कविता क्यो लिखते हे ? साहित्य की ओर भी तो अनेक विधाए हे, उनकी ओर प्रवृत्त क्यो नही होने ? जीवनी यात्रा वृत्तात, ललित निवध, रेखाचित्र आदि कई विधाए उपेक्षित क्यो हे ? एकाकी भी एक ही आया, किन्तु कविताए ढेरो—कुछ ने तो पूरे के पूरे कविता-सग्रह ही भेज दिए। यहा यह वात भी ध्यान मे रखनी चाहिए कि रचनाकार को स्वय अपना सपादक, स्वय अपना निर्णायक, स्वय अपना आलोचक होना चाहिए ओर अध्यापक को तो खासकर होना ही चाहिए। वह अपनी ही रचना का ठीक से चुनाव नही करेगा तो किसका करेगा ?

कुछ की सब रचनाए अच्छी थी, किन्तु सब तो नही छाप सकते, अत प्र... रचनाकार की एक ही रचना लेकर सतोष करना पडा। यह हमारी विवशता थी, कृपया इस विवशता को समझे और अगले वर्ष कम, लेकिन अच्छी रचनाए भेजे।

इतना अधिक रचनाशीलता को अपने सामने देखकर मुझे अपनी यह धारणा बदलनी पडी कि हिन्दी साहित्य मे आज जडता आ गई है या कुछ लिखा नही जा रहा है। रचनाशीलता का यह नवांकुर राजस्थान जैसे मरुप्रदेश से फूटा है और राजस्थान का शिक्षा विभाग निरंतर इस काम को प्रोत्साहित कर रहा है, यह और भी संतोष की बात है।

अध्यापको और विद्यार्थियो को पाठ्यक्रम से बाहर के साहित्य का भी विपुल अध्ययन करना चाहिए, तभी उनकी रचनाशीलता को बल मिलेगा। ससार के सब बडे लेखक अच्छे पाठक भी है। आज अच्छे पाठको की निरंतर कमी होती जा रही है। दिनकर ने कभी कहा था 'हमे नेता नही, नागरिक चाहिए।" आज मै कहना चाहता हू कि "हमे लेखक नही पाठक चाहिए।"

अगर हम अच्छे पाठक होगे, तो हमारे मन मे नये नये विषय आएगे, हम केवल फार्मूलाबद्ध लेखन ही नही करेगे। इस बार "पेड लगाओ" पर करीब पचास कविताए आ गई। और भी तो विषय है। हमारी लोककलाओ से, लोकगीतो से, लोकगाथाओ मे हम क्यो कोई प्रेरणा नही लेते ? हमारी एक श्रव्य-काव्य की परपरा भी है क्यो नही हम उसे अपनी रचना मे लाते ?

कुछ रचनाकार मौलिक, अप्रकाशित का प्रमाणपत्र देकर भी अन्यत्र पूर्व प्रकाशित रचना भेज देते है, वे सपादक को धोखा देते है, पाठको को धोखा देते है, अपनी छवि धूमिल करते है। ऐसा नही करना चाहिए, आज सपादक भी और पाठक भी समझदार हो गया है।

इस पुस्तक मे प्रकाशित उन सभी रचनाकारो के प्रति तो आभार प्रकट करना ही चाहिए उन सभी अप्रकाशित रचनाकारो का भी आभार, जिनकी रचनाए उपयुक्त कई कारणो से अस्वीकृत करनी पडी। रचनाओ को पढने, छाटने और प्रकाशन-योग्य बनाने मे निश्चय ही काफी श्रम लगा। अगर इन रचनाओ से बालको मे भी रचनाशीलता जागेगी तो मेरा श्रम व्यर्थ नही जाएगा।

63 B भगवान नगर
नई दिल्ली- 110014

(राजेन्द्र उपाध्याय)



राजेन्द्र उपाध्याय

20 जून, 1958 को सेलाना (जिला रतलाम) मध्य प्रदेश मे जन्म। बी ए शिमला से, एम ए कलकत्ता विश्वविद्यालय से—कानून स्नातक भी।

शुरू मे कुछ दिन भारतीय भाषा परिपद् मे डॉ प्रभाकर माचवे के साथ काम। वत्सल-निधि के कुछ शिविरो मे सहभागी।

1983 से विधिवत् सरकारी सेवा मे—कुछ दिन पत्र सूचना कार्यालय मे रहने के बाद अब भारत सरकार के प्रकाशन विभाग मे सहायक सपादक—केन्द्रीय सूचना सेवा मे राजपत्रित अधिकारी।

एक कविता-सग्रह 'सिर्फ पेड ही नही कटते है' 1983 मे प्रकाशित।

एक कहानी-सग्रह 'ऐश ट्रे' 1989 मे प्रकाशित।

एक उपन्यास लिखने की बरसो से तमन्ना हे। कुछ आलोचनात्मक उद्यम भी।

63-B भगवान नगर
नई दिल्ली-110014

(राजेन्द्र उपाध्याय)

अनुक्रम

परीक्षा

दीनदयाल शर्मा

पात्र परिचय–शिव, भोला, महाराज, मत्री, ग्रामीण एक, दूसरा, तीसरा,

शिव-भोला (एक साथ) महाराज की जय हो महाराज की जय हो ।

महाराज कहो जवान, कैसे आए हो ?

शिव महाराज, आप योग्य आदमियो का सम्मान करते है तो हमे भी अपने दरबार मे कोई काम दे दीजिये ।

महाराज क्या नाम है तुम्हारा ?

शिव महाराज, मेरा नाम शिवगणेश है

भोला और मेरा नाम भोलाशकर है, महाराज ।

शिव हम दोनो रावछर से आए है और काम की तलाश कर रहे है, महाराज !

महाराज काम तो दे देगे परन्तु अपने दरबार मे नोकरी देने से पहले हम आप दोनो की परीक्षा लेना चाहेगे ।

शिव-भोला (एक साथ) परीक्षा देने के लिए हम तेयार है, हुजूर ।

महाराज मत्री जी !

मत्री जी महाराज ।

महाराज मिट्टी से भरी दो वाल्टिया मगवाई जाए ।

मंत्री जो आज्ञा, महाराज । ! **(मत्री जाता है)**

महाराज तुम दोनो कितने पढे हुए हो ?

शिव महाराज ! मै पाचवी कक्षा तक पढा हुआ हू और भोलाशकर विल्कुल अनपढ है । **(मत्री का प्रवेश)**

मत्री ये लो महाराज, मिट्टी से भरी दो वाल्टिया ।

महाराज शिवगणेश ओर भोलाशकर !

शिव-भोला (एक साथ) जी महाराज ।

महाराज तुम दोनो को गली-बाजार मे जाकर यह मिट्टी बेचकर आना है।

शिव-भोला **(एक साथ)** जी महाराज !

महाराज यदि इस परीक्षा मे सफल हो जाओगे तो मे तुम दोनो को अपने दरबा मे अच्छे पदो पर रख लूगा।

शिव-भोला **(एक साथ)** जो आज्ञा, महाराज !

(दृश्य परिवर्तन)

भोला मिट्टी ले लो, मिट्टी मिट्टी ले लो मिट्टी ले लो मिट्टी मिट्टी ले लो।

ग्रा एक अरे ओ मिट्टी वाले भाई ! एक बाल्टी मिट्टी कितने मे दोगे ?

भोला आप कितने पेसे दोगे ?

ग्रा एक मे तो चार आने दूगा।

भोला चार आने मे नही देता।

ग्रा एक ता आठ आने ले लो।

भोला नही, आठ आने मे भी नही देता।

ग्रा एक तो फिर कितने पेसे लोगे ?

भोला दो रुपये लूगा।

ग्रा एक चल-चल, आगे चल।

भोला मिट्टी ले लो मिट्टी मिट्टी मिट्टी ले लो मिट्टी मिट्टी ले लो मिट्टी !

ग्रा दो क्या भेया, एक बाल्टी मिट्टी के कितने दाम लगाओगे ?

भोला दो रुपये से एक भी पाई कम नही करूगा भाई !

ग्रा दो रियायत करो भाई , मागी तो मौत भी ना मिले।

भोला मोल-मुलाई नही हे भाई, दो से कम लू एक न पाई।

ग्रा दो ठीक हे ले आओ --ले आओ अरे भेया, तुम नही बेचोगे क्या ?

शिव नही, मे नही बेचता। भोलाशकर।

भोला हा भेया !

शिव शाम को सुभाप चोक पर मिलना। अपना दोनो दरबार मे मिलकर एक साथ ही चलेगे।



भोला ठीक है भैया।

(दृश्य परिवर्तन)

शिव (अपने आप से धीरे-धीरे बोलता हे) मे इस प्रकार मिट्टी नही वेचूगा। एक तरकीब सोचता हू। हा, यह ठीक है। पहले तो एक रेहडी किराये

पर ले लेता हू और फिर मिट्टी मे तरह-तरह के सूखे रग मिलाकर, उनकी अलग-अलग ढेरिया बना लूगा। फिर उन पर अलग-अलग नामो की पर्चिया लगा दूगा। यही ठीक रहेगा।

(दृश्य परिवर्तन)

शिव मिट्टी ले लो मिट्टी बहुत ही अनमोल मिट्टी है यह मथुरा की मिट्टी है, जहा कृष्ण-कन्हैया खेला करते थे। यह अयोध्या की मिट्टी है शुद्ध और मूल्यवान, जहा भगवान राम बचपन मे घुटनो के बल चलते थे। यह हरिद्वार की मिट्टी है ओर यह कुरुक्षेत्र की मिट्टी है, भाइयो और बहनो। मेरे पास बहुत थोडी-सी मिट्टी बची है। लुटा दिया माल। एक रुपये की एक तोला। मिट्टी मिट्टी ले लो मिट्टी। मथुरा की मिट्टी ले लो, अयोध्या की मिट्टी ले लो। लुटा दिया माल।

(कुछ ही देर मे रेहड़ी के चारो ओर लोगो की भीड़ इकट्ठी हो जाती है।)

ग्रा एक दो रुपये की मिट्टी देना।

ग्रा दूसरा एक रुपये की मुझे देना।

ग्रा तीसरा पाच रुपये की मुझे देना भाई। पहले मुझे देना।

ग्रा तीसरा पहले मै लूगा। बीस रुपये की सभी मिट्टी दो-दो तोले कर दो।

ग्रा दूसरा एक रुपये की मुझे देना जी।

शिव सबको मिल जाएगी। बारी-बारी से सभी को मिलेगी। सब लाइन बना लो। **(सब लोग लाइन बनाते हैं)** हा, तुम बोलो, कितने की लोगे?

ग्रा तीसरा मुझे दो-दो तौले सभी प्रकार की मिट्टी दे दो ये लो बीस रुपये।

शिव लाओ ये लो अयोध्या की ये लो मथुरा की **(कागज की पुड़िया बाधते हुए)**

ग्रा एक मुझे दो रुपये की यह मिट्टी देना।

शिव यह लो भाई। और बोलो।

ग्रा दूसरा एक रुपये की यह देना जी।

शिव यह लीजिये साहब, चलो, सारी मिट्टी बिक गई। अब नही है, भैया।

(दृश्य परिवर्तन)

[सुभाष चौक पर बैठा भोलाशकर मूगफलिया खा रहा है, तभी शिवशकर आता है।]

शिव भोला।

भोला हा भैया।

शिव चलो, महाराज के दरबार म चलें।

भोला चलो भैया।

(दृश्य परिवर्तन)

शिव-भोला **(एक साथ)** महाराज की जय हो।

महाराज मिट्टी बेच आए तुम ?

शिव-भोला हा, महाराज।

महाराज कितने मे बेचकर आए हो ?

शिव मे पाच सो पच्चीस रुपये मे बेचकर आया हू महाराज।

महाराज और तुम कितने मे बेचकर आए हो भोला ?

महाराज मे तो दो रुपये मे बेचकर आया हू महाराज।

महाराज शिव, तुम इस परीक्षा मे सफल हो गए हो, अत आज से तुम हमारे दरबार मे मत्री पद का काम सभालोगे।

शिव **(अदब से झुक कर)** जो आज्ञा, महाराज।

महाराज और भोला।

भोला हा, महाराज।

महाराज मे तुम्हे अपने महल के द्वारपाल का काम सौपा रहा हू।

भोला **(झुक कर)** जो आज्ञा, महाराज।

महाराज आज से तुम दोनो अपना-अपना काम सभालो।

शिव-भोला **(एक साथ झुकते हुए)** जो आज्ञा, महाराज, **(एक साथ)** महाराज की जय हो महाराज की जय हो महाराज की जय हो।

(पर्दा गिरता है)

धोती के मोती

शीताशु भारद्वाज

दादी ने कभी मुझे एक कहानी सुनाई थी, वही अव मे तुम्हे सुना रहा हूँ।

प्राचीन काल मे सरयू-घाटी मे एक ईश्वर-भक्त ब्राह्मण रहा करते थे। ईश्वर न उन्हे सब कुछ दिया हुआ था। उनके सात वेटे और सात वहुएँ थी। सातो वेटे रोजी रोटी के लिए परदेश गए हुए थे। वहुए घर मे परिवार के साथ अकेली ही रहा करती थीं। वे सभी तो अपनी घर-गृहस्थी मे ही उलझी रहती थी।

ब्राह्मण देवता वहुत ही धर्मपरायण जीव थे। वर्षों से वे सरयू नदी के पवित्र जल मे स्नान कर ईश-वदना किया करते थे। धीरे-धीरे उन्हे वुढापा घेरने लगा। अव वे बूढे हो आए थे। शरीर शिथिल पड चुका था। वे कही भी आ-जा नही सकते थे। उनके लिए आगन, पर्वत ओर देहरी परदेश बनने लगी थी। बेचारे वावडी के ही पानी से नहा कर सतुप्ट हो जाया करते। लकिन उनका मन हर समय सरयू के पवित्र जल के लिए ही तरसता रहता था।

एक दिन उन ब्राह्मण देवता ने सोचा क्यो न बहुओ से ही सरयू का पवित्र जल मगवा लिया जाए। आखिर बहू-वेटियाँ भी तो बडो की सेवा कर पुण्य कमाया करती है। यही कुछ सोच कर एक दिन उन्होने वडी वहू से कहा— 'बडी बहू, मे जीवन भर सरयू नदी के पवित्र जल मे ही स्नान करता रहा हूँ। अब मेरा शरीर शिथिल पड चुका हे। क्यो न तुम सरयू मे स्नान करके एक गगरी जल मेरे लिए भी ला दिया करो।'

'नही ससुर जी।' वडी बहू ने जल लाने मे असमर्थता जतला दी—'सुबह सुबह ठड बहुत पडा करती हे, ओर फिर सरयू भी नो यहाँ से बहुत दूर है। यहाँ घर मे मेरे छोटे-छोटे बच्चे हे। आप तो वुढाप मे भी वच्चो जैसी बात करते है। आप दूसरी बहुओ से कहो वे ला दिया करेगी।'

बहू के उस व्यवहार से ब्राह्मण देवता निराश हो आए। उन्होने दूसरी बहुओ से भी सरयू जल लाने की वात कही। किन्तु कोई भी तो उस काम के लिए राजी नही हुई।

हर कोई बहाने बनाने लगी । अत मे वे छोटी बहू के द्वार पर जा पहुँचे । छोटी बहू न झुक कर उन्हे सादर पायलागी की ।

—आयुष्मती भव ! वे गद्गद् भाव से पुत्रवधू को आशीर्वाद देने लगे ।

—बैठिए, ससुरजी ! छोटी बहू न उनके लिए चोका बिछा दिया—आज मे धन्य हो गई जो आपने मेरे घर मे पॉव रखे ।

—बहू ! चोके पर बेठ कर उन्होने छोटी बहू से वही दयनीय याचना की— कभी मे भी चलता-फिरता मानुष था । ब्राह्म मुहूर्त्त मे शेया त्याग कर मे नित्य ही सरयू म जाकर स्नान किया करता था । अब मुझे बुढापे ने धर दबोचा हे । अब ऐसे म

—मे आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ, ससुर जी ? छोटी बहू ने विनीत स्वर म पूछा ।

—मेरे लिए खाने-पीने की कोई कमी नही है । ब्राह्मण ने गहरी सास खीची । अब मुझमे सरयू तक जाने की हिम्मत नही रही । अब तो वह नदी मेरे लिए परदेश बन गई है । क्या तुम वहॉ स्नान कर वहॉ से एक गगरी जल ला सकोगी ? मे उसी से स्नान कर लिया करूँगा ।

—क्यो नही, ससुरजी ? छोटी बहू ने प्रसन्न मन से कहा— आप जेसे बडे-बूढो की सेवा करना ही तो हमारा धर्म होता है । आप चिता न करे । कल से मे सुबह-सुबह सरयू मे नहा कर वहॉ से आपके लिए एक गगरी जल ले आया करूँगी ।

—सुखी रहो ! ब्राह्मण देवता ने गद्गद् भाव से कहा । उधर से वे अपने घर आ गए ।

छोटी बहू बहुत ही समझदार ओर दूरदर्शी थी । दूसरे ही दिन से वह अपन श्वसुर क लिए सरयू का जल लाने लगी । श्वसुर उस स्नान से प्रसन्न थे । जब वे नहा लेते तो छोटी बहू उनकी गीली धोती निचोडने लगती । किंतु यह क्या ? जल की बूदे तो मोती बन रही थीं । वह उन्हे सभाल कर सदूक मे रखने लगी । उसकी वह सदूक मोतियो से भरन लगी ।

दिन-महीने बीतते गए । छोटे बहू उसी निष्काम भाव से श्वसुर की सेवा करता गई ।

—ससुरजी, आप अपन व्रत का पारायण कर ले । एक दिन छोटी बहू ने उनस प्रार्थना की व्रत-व्यवस्था की आप चिता न करे । वह सब मे कर लूँगी । न्योता भी मे ही दे दूँगी ।

ब्राह्मण छोटी वहू की सेवाओ से प्रसन्न थे। उन्होने अपनी स्वीकृति दे दी। वहू
पडोसियो, सवधियो ओर ब्राह्मणो को सादर आमत्रित कर लिया। व्रत पारायण क
दिन भी आ गया। ब्राह्मणों को खिला-पिला कर छोटी वहू उन्हे दक्षिणा मे एक ए
मोती देने लगी।

निर्धन वहू के उस वेभव को देख कर अन्य वहुएँ उससे मन-ही-मन जलने-भुनने लगी
वडी वहू ने उसे अलग ल जाकर पूछा — वहन, तू तो गरीव घर की हे। तेरे पति भी परदे
मे हे। फिर भी तूने भोजन मे छत्तीस प्रकार के व्यजन वनाए हे। ब्राह्मणो को भी तूने दक्षि
मे मोती दिए ह। तूने ये सव केसे कर लिया ?

छोटी वहू सरल स्वभाव की थी। उसने अपनी जेठानी को सव कुछ वतला दिया।
उसने लबी सास खीच कर कहा—दीदी, ये सव ससुरजी की सेवा का फल है।

वडी वहू कपटी थी। ईर्ष्या-डाह से वह भुनने लगी। उसके मन मे लालच घर करने
लगा। दूसर दिन सुवह-सुवह ही वह श्वसुर के पास जा पहुँची। वह उनसे प्रार्थना करने
लगी—ससुरजी, कल से आपके लिए सरयू से जल मे लाया करूगी। छोटी देवरानी को
जल लाते हुए वहुत दिन हो गए हे। आपकी सेवा का फल मुझ भी तो मिलना चाहिए
न।

—हॉ हॉ, क्यो नही। ब्राह्मण देवता ने कहा—जरूर लाया करो।

कपटी वहू सरयू से जल की गगरी ले आई। श्वसुर ने उससे स्नान किया। स्नान
के वाद वडी वहू उनकी गीली धोती को निचोडने लगी। कितु यह क्या ? उससे निकलता
हुआ कीचड उसके शरीर पर पडने लगा। उसने वे सारी वाते अपनी अन्य देवरानियो
को वतला दी। उसी दशा मे वह श्वसुर के पास जा पहुँची। उसने कहा—ससुरजी, मै
कल से जल नही लाया करूँगी।

—ठीक हे, वच्चा। ब्राह्मण ने निरपेक्ष भाव से कहा।

एक दिन वडी वहू ने अपनी अन्य देवरानियो के साथ मिल कर रात के समय छोटी
वहू की वह सदूक चुरा ली जो मोतियो से भरी हुई थी। उधर, छोटी वहू निरपेक्ष भाव
स अपने श्वसुर की सवा-शुश्रूषा करती रही। उसे उसी काम मे तृप्ति मिल रही थी।
जव श्वसुर नहाते तो वह उनकी गीली धोती को निचोडने लगती। लेकिन इस वार तो
जल की वे वूदे हीरे ओर लाल वनने लगी।

एक दिन वडी वहू उसी छाटी देवरानी के यहा चल दी। वह उसे वनाने लगी अरी

वहन, तुझे नो ससुरजी की धोनी निचोडने मे मोती ही मिला करते थे, लेकिन मुझे तो उसमे भी वहुत कुछ मिला है। आज जव मै सरयू से जल की गगरी भर कर लाई तो घर आकर वह गगरी लालो मे ही भर गई।

छोटी ने कुछ नही कहा। वडी अपनी ही गाये जा रही थी। उसने छोटी की सदूक से चुराए गए मोतियो की वह थैली खोल कर उसके आगे उँडेल दी। लेकिन यह क्या ? वे ता सार-के-मारे पत्थर के टुकडे थे। ऐसे मे बडी बहू खिसिया कर ही रह गई।

छोटी वहू को जेठानी के अदर की खोट को ताडते देर नही लगी। उसने मुस्करा कर विनम्र भाव से कहा— दीदी, सरयू मे लाले भी हे, हीरे ओर मोती भी है। तो उसम पत्थर की ककडियॉ भी हे। जो जिस भाव से काम करता है, उसे वही मिलता हे। ससुरजी की सेवा-शुश्रूपा मेरे लिए मोती लाई हे तो आपके लिए पत्थर की ककडियॉ!

वडी के सिर पर घडो पानी पडने लगा। वह क्या कहती ?

दादी ने कहानी सुनाई थी, ओर मै आज भी जब-तव इस कहानी को गुनता रहता हूँ। तुम भी गुनोगे ?



पश्चात्ताप के आँसू

श्यामसुदर तिवाड़ी 'मधुप'

जग्गू तीन चार सीढियॉ ही नही चढ पाया कि पीछे से उसकी सौतेली मॉ की कर्कश आवाज सुनाई दी -- 'आ गए लाट साव, सब्जी लेकर। इतनी देर कैसे लगा दी -- अधेरा पडने आया हे। अब खाना क्या तेरी मॉ आकर बनाएगी ?'

जग्गू कुछ बोलने ही वाला था, इससे पहले ही वह बोल उठी -- 'चुप कर। जा, दूध ले कर आ।'

सुबह-शाम सोतेली मॉ के ताने व घर के कामकाज से उसको फुर्सत ही नही मिल पाती। लेकिन जब भी वह पढने बैठता तो उसे कोई न कोई काम बता दिया जाता। फिर भी वह समय निकाल कर अवश्य पढता। उसकी बुद्धि बडी ही प्रखर थी। विद्यालय मे पढाए गए पाठो को वह भूलता नही था। समय मिलने पर उनका घर पर दोहरान अवश्य कर लेता। कभी-कभी तो रात्रि के समय सोतेली मॉ के पैर दबाते-दबाते ही उसे नीद आ जाती।

अनिता सोतेली मॉ की इकलोती वेटी थी। वह पाचवी कक्षा मे पढती थी तथा हमेशा जग्गू को चाहती थी। वह चोरी छिपे उसकी मदद भी कर दिया करती थी।

जग्गू सोतेली मॉ के वर्ताव को सहता हुआ समय विता रहा था। करता भी क्या, आठ वर्ष का छोड कर उसकी मॉ जो चल वसी थी।

पिताजी का व्यवहार दोनो वच्चो के प्रति समान था। लेकिन वच्चो की मॉ के व्यवहार से वे भी हमेशा खिन्न रहते थे। धधे का विस्तार इतना था कि कभी भी ऐसा अवसर नहीं आया कि उन्होने कुछ पल वच्चो के साथ विताए हों।

जग्गू व अनिता अलग-अलग विद्यालयो मे पढते थे। जग्गू इस वर्ष कक्षा आठ का विद्यार्थी था। वह तो हमेशा प्रात काल ही स्कूल चला जाता था। लेकिन अनिता का समय दिन के वारह वज का था, अत उसकी मॉ ने उसके लिए रिक्शे की व्यवस्था कर रखी थी।

एक दिन की वात, वारह वज चुके थे परन्तु रिक्शा वाला नही आया। अनिता को

चिन्ता लगने लगी कि आज वह समय पर स्कूल नही जा पाएगी। तभी माँ की आवाज सुनाई दी — 'बारह बज चुके है अनिता, आज स्कूल नही जाना हे क्या ?'

'माँ, देखो न, अभी तक रिक्शा वाला भी नही आया है। कैसे जाऊँ ?'

'अरे अनिता, तुम यहाँ ?' जग्गू ने आश्चर्य से पूछा।

'क्यो जग्गू, तूने रिक्शे वाले को देखा क्या ?' अनिता ने पूछा।

'अरे ! तुझे अभी तक भी नही मालूम ?'

'नही तो ! क्या कोई विशेष बात हे ?'

'हाँ, आज पूरे शहर मे रिक्शा-चालको की हडताल है। अभी थोडी देर बाद उनका जुलूस भी आने वाला है।

'तू खडा-खडा क्या मुँह देख रहा है ? जा इसको स्कूल छोड आ।' माँ ने गुस्से मे कहा।

'ले चल, मे तुझे स्कूल छोड आता हूँ।'

'नही जग्गू, आज मे स्कूल नही जाऊँगी। घडी देख, साढे बारह तो यहीं बज चुके हे।'

'तू चिन्ता मत कर। में तुम्हारी मेडिम को देरी से आने का कारण समझा दूँगा।' ओर अनिता जग्गू की बात से सहमत होकर विद्यालय चल पडी।

शाम को जग्गू अनिता को लेकर वापस घर आ रहा था। रास्ते मे अनिता दीवारो पर लगे पोस्टरो को पढती हुई चल रही थी। तभी एक ट्रक उनके पास से होकर गुजरा।

जग्गू ने अनिता को अपनी आर खीच लिया। वरना ओर सतुलन बिगडने से वह खुद एक साईकिल की चपेट मे आ गया।

'अरे ! जग्गू, तेरे सिर से तो खून बह रहा हे।' अनिता ने उसका रूमाल उसके सिर पर बाँध दिया और उसे लेकर पास ही के क्लीनिक पर पहुँची।

जग्गू के सिर पर पट्टी देख कर माँ का पारा चढ गया। 'लो, अब इसकी सेवा भी मेरे ऊपर आ पडी। हे भगवान ! इस सकट से मुझे कब छुटकारा मिलेगा। या तो मुझे उठा ले या फिर ' कहती हुई वह रसोईघर मे चली गयी।

'माँ तुम भी कैसी माँ हो ? क्या जग्गू तुम्हारा दुश्मन है, जो इस तरह दिन भर उसको बुरा-भला कहती रहती हो। तुम्हे मालूम होना चाहिए कि आज जग्गू ने मुझे न खीचा होता तो मे ट्रक ' कहती-कहती अनिता सुबक पडी।

'पूरी बात बताओ अनिता। माँ ने उसे पुचकारते हुए पूछा। सुबकते हुए अनिता ने सारी घटना माँ को बता दी। सुनते ही माँ की आँखो मे भी आँसू का अबार फूट पडा। जग्गू के प्रति उसका प्यार उमड पडा ओर कमरे मे जाकर जग्गू को गले लगाया तथा उसका माथ चूमने लगी।

सोतेली माँ का यह उमडा हुआ प्यार देखकर जग्गू को यूँ लगा मानो स्वर्ग से उसकी माँ ही उतर आई हो।



जान सके तो जान

मायामृग

बिन जाने मत रहना बेटा
जीवन किसको कहते हे?
कोनसी हे वह धारा जिसमे
हम सब बहते रहते हे।

क्यो घर छोडा सिद्धार्थ ने
महावीर ताप क्यो सहते हे।
पा ही लेते हे वो सच को
जो तप की आग मे दहते हे।

इक दिन मिथक टूट जाते हे
भ्रम के महल सब ढहते हें।
बिन जाने मत रहना बेटा
जीवन किसको कहते हे।



धन किसका

भोगीलाल पाटीदार

चुण्डावाडा गॉव मे सभी जातियो के लोग रहते है। तीज त्यौहार सभी मिल-जुलकर मनाते हे। कभी मन-मुटाव नही होता। कदाच विवाद हो भी जाए तो आपस मे मिलकर सुलझा लेते है। एक वार गॉव मे अकाल पडा। दूसरे वर्ष अतिवृष्टि से फसल चोपट हो गई। खेती करने वाले किसानो को भी अनाज खरीदकर खाने की नोवत आ गइ।

रामेश्वर ओर रामधन अच्छे मित्र थे। इस बात को पूरा गॉव जानता था। रामेश्वर खेती करता था। उसके पास जमीन अच्छी थी, इस कारण उपज वहुत होती थी। रामधन का धन्धा दुकानदारी का था। जमीन थी लेकिन अच्छी नही होने से कोइ वटाई पर भी नही करता था। गॉव मे अनाज की पाक कम होने से दुकान ठप्प हो गई। उसका एक रिश्तेदार खाडी देश मे रहता था। उसने सोचा—'दुकान मे चला लूँगा ओर लडके को विदेश भेज दूँगा, जिससे गृहस्थी की गाडी आराम से चलेगी। कुछ रुपए ता हे ओर शेप खेत वेच कर पूरे कर लूगा।'

अपने मन की वात उसने अपने मित्र को बताई। रामेश्वर ने खेत न वेचने की सलाह दी ओर कहा—'जितने रुपयो की जरूरत हो मुझ से ले जाना।' रामधन किसी का उपकार लेना नही चाहता था ओर फिर खेतो से कुछ मिलता भी तो नही था। आखिर थक कर रामेश्वर ने आम्वावाला खेत खरीद लिया ओर उसकी कीमत चुका दी।

रामधन का लडका खाडी देश चला गया। वहाँ उसके रिस्तेदार ने उसकी नोकरी भी लगा दी। एक साल मे उसने अपने आने का खर्चा कमा लिया। तभी वहा दोनो देशा के वीच युद्ध छिड गया। सभी लोग अपने देश चले आए, उनके साथ रामधन का लडका भी चला आया।

रामेश्वर ने जो खेत रामधन से लिया था, वह कई सालो से विना खेती किए पडा था। जमीन अच्छी नही होने से किसी ने वटाई पर खेती नही की थी। रामेश्वर की मड़ वनवाई, चारो ओर वाड़ लगवाई ओर वाहर से अच्छी मिट्टी लाकर डाली। आपाढ आने पर अच्छी वर्पा हुइ। रामेश्वर का लड़का हल लेकर

गया। खेत के बीचोबीच हल जाते ही बैल रुक गए। उसने बैलो को डण्डा मारा तो हल टूट गया, लेकिन जमीन के अन्दर से एक घडा निकला। उसने देखा तो अन्दर चाँदी के रुपये थे। लडका घडा ले कर घर आया और पिताजी को सारी बात बताई।

रामेश्वर ने चाँदी के रुपयो से भरा घडा देखा तो आश्चर्य चकित हो गया। उसने इस धन के बारे मे बहुत सोचा। अन्त मे रामधन को देने का निर्णय लिया। रामधन को बुला कर घडे की बात बताई और कहा—'रामधन! मैने तेरे पास से जमीन खरीदी है, अन्दर का धन नही। इसलिए यह धन तुम्हारा है, इसे ले जाओ।' थोडी देर रामधन चुप रहा, फिर बोला—'रामेश्वर भाई! मै गरीब जरूर हूँ लेकिन ईमान से निर्धन नही हूँ। इस धन के लालच मे आज तक कमाई हुई ईमानदारी कैसे छोड दूँ। खेत के साथ उसमे जो कुछ था वह सब खरीदने वाले का हो गया। यदि मै जानता तो उसे निकाल क्यो नही लेता? कोई भी वस्तु जिसके भाग्य मे लिखी हुई हो, उसे ही मिलती है। इसलिए यह धन मेरा नही आपका है।

दोनो अपनी-अपनी बात पर अडिग थे। एक हिमालय के समान, तो दूसरा ध्रुव तारे के समान अटल। यह बात गाँव मे हवा की तरह फैल गई। कुछ लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए दोनो पक्षो से उल्टी-सीधी बातें कर रहे थे। बिगडते वातावरण को देखकर दोनो मित्र मिले। उन्होने बहुत सोच-विचार किया, फिर एक योजना बनाई। इस योजना को गाँव के मुखिया और सरपंच साहब को बुलाकर बता दी।

एक माह बाद पन्द्रह अगस्त का त्योहार आया। उस दिन हर वर्ष की भांति गाँव के सभी नागरिक स्कूल मे आए। झण्डारोहण के बाद सरपंच साहब ने भाषण दिया। भाषण के अन्त मे गाँव की समस्याओ के बारे मे बोले—'भाइयो! अपने गाँव मे अस्पताल नही होने से बीमारो को लेकर सीमलवाडा जाना पडता है। बरसात के समय नदी मे बाढ आने से वहाँ पर भी नही जा सकते है। इन तकलीफो को आप अच्छी तरह जानते हो, इसलिए गाँव मे अस्पताल की जरूरत है।'

भीड मे से आवाज आई—'बात तो ठीक है पर हम क्या कर सकते है? अस्पताल तो सरकार खोलती है।'

सरपंच साहब बोले—''हाँ! आपने ठीक फरमाया। सरकार डॉक्टर और कम्पाउण्डर देने के लिए तैयार है। अस्पताल का भवन गाँव वालो को बनाना होगा। हमे जनसहयोग करना पडेगा। बोलो, कौन कौन इस कार्य मे सहयोग देगे?''

लोगो मे चुप्पी का सन्नाटा छा गया। कही से भी आवाज नही आई। क्षणिक इन्तजार करने के वाद आगे वोले—"अस्पताल का भवन वनाने के लिए दो दानी हमारे बीच मे वेठे हुए हे। इनका नाम है रामेश्वर ओर रामधन। दोनो मिलकर अस्पताल का भवन वना रहे है। इस शुभकार्य का शुभारभ आज से ही हो रहा हे।" लोगो मे खुशी की लहर फेल गई। तालियो की गडगडाहट के साथ नारे गूँज उठे—"भारत माता की—जय! पन्द्रह अगस्त—अमर रहे!!"



नभ के तारे

सागरमल शाह

नित रात को झिल-मिल करते।
हिल-मिल रहते नभ के तारे ।।
नील गगन मे जग-मग करते।
कभी न डरते नभ के तारे ।।
प्रेम सहयोग का पाठ पढाते।
सव को भाते नभ के तारे ।।
पूछ वनाकर कभी टूटते।
सदा ही हॅसते नभ के तारे ।।
भटके राही को राह दिखाते।
समय वताते नभ के तारे ।।



मेहनत का पुरस्कार

निशान्त

एक कस्बे के लिए नयी मण्डी मजूर हुई। आसपास के गॉवो के किसान खुश हुए कि चलो, गल्ले को इतनी दूर शहर ले जाने से बचे। शहर जाने वाली सडक पर ट्रैफिक भी बहुत रहता था। आए दिन कोई न कोई एक्सीडेंट हुआ करता था। कभी किसी किसान की बैलगाडी का एक्सीडेंट हो जाता तो कभी ट्रेक्टर का। आसपास के इलाके के कई आदमी मारे जा चुके थे।

लेकिन नई मण्डी के साथ एक दिक्कत यह हुई कि जो स्थान इसके लिए मजूर हुआ वह बडा ऊबड-खाबड था। किसानो को अपने अनाज एव रूई-कपास के ढेर लगाने मे बडी कठिनाई आती थी। गड्ढो मे बैलगाडियॉ और ट्रेक्टर फस भी जाया करते।

किसानो ने अधिकारियो का ध्यान अपनी इस समस्या की ओर दिलाया लेकिन अधिकारी कुछ कर न सके। समस्या यह, कि जमीन को समतल करने के लिए लाखो रुपये के बजट की जरूरत थी। अफसरो की लिखा-पढी के बावजूद भी बजट मजूर न हुआ। सरकार की आर्थिक हालत डॉवा-डोल थी। यूँ ही दो साल बीत गए।

आखिर मे किसानो का धीरज टूट गया। उन्होने फैसला किया कि हम सब मिल कर अपने आप ही जमीन समतल करेगे। इलाके के किसानो की पचायत हुई। पचायत मे फैसला हुआ कि प्रत्येक ट्रेक्टर वाला किसान अपना ट्रैक्टर कराहे सहित लेकर आए। सब ट्रेक्टर वाले किसान बात मान गए।

दूसरे दिन से ही उस जगह पर ट्रेक्टर चलने लगे। मेहनत रग ला रही थी। चार दिन बाद जब सारी भूमि लगभग समतल हो ही जाने वाली थी, एक आश्चर्यजनक घटना वहा घटी। एक ट्रेक्टर के कराह के नीचे से एक घडा निकला। घडे का मुँह कपडे से बद था। किसानो ने उसे खोल कर देखा। उसमे चादी के पुराने रुपये थे। आजकल ऐसे पुराने चॉदी के सिक्के की कीमत लगभग सो रुपये है। किसानो ने उन्हे अपनी मेहनत का पुरस्कार समझ कर अपने बीच मे बॉट लिया।

बादल

घमेली मिश्र

रग-बिरगे पहने कपड़, ओढ़े सिर पर सुन्दर ताज ।
सबको हर्षित करती आई, देखो ! काली बादरी आई ।।

अम्बर धरती पर उतरा है, सूर्य रश्मियाँ छिपी ओट मे ।
दिन म भी अधियारा छाया, फिर भी बच्चो के मन भाया ।।

छमछम नाच रहे हे बच्चे, खेल रहे हे नाना खेल ।
पक्षी नहा रहे हे दखो, खोल-खोलकर अपने पख ।।

परियो-से सुन्दर हे बादल, खेल रहे है नाना खेल ।
नर्तन-गर्जन करते बादल, नभ मे खूब मचाते शोर ।।

प्यास बुझाते हे चातक की, आँख मिचौनी खेले हरदम ।
नदिया, सागर, नाले भरते, सबको प्राण दिलाते बादल ।।



सरला का सपना

रमेश भारद्वाज

सरला अभी बालिका ही थी। कक्षा छह मे पढने मे तो कोई सयाना नही हो जाता। फिर भी यह कहा जा सकता है कि वह समवयस्क बालक-बालिकाओ से अधिक सयानी थी।

वह जब अपने पिता और उनके मित्रो, सम्बन्धियो और पडौसियो को वस्तुओ के अभाव और मँहगाई के बारे मे बाते करते सुनती थी तो सोचा करती थी कि ये चीजे कहाँ गायब हो जाती है ? महँगाई क्यो बढ जाती है ? वह जब भी किताब कापी, पेन-पेसिल, या किसी और वस्तु की माँग करती तो मम्मी महँगाई का जिक्र कर उसे टालने का जतन करती।

सरला सोचती थी कि इस महँगाई और चीजो के अभाव को कैसे दूर किया जा सकता है। जब दुनिया के सब काम हो सकते है तो यह काम क्यो नही हो सकता है ? वह बहुत देर तक बैठी-बैठी इस तरह सोचती रहती।

एक दिन उसकी कक्षा पिकनिक के लिए बाहर जा रही थी। प्रत्येक लडकी से पाँच-पाँच रुपये माँगे गए थे। सरला ने घर पर आकर मम्मी को सारी बात बतायी और पाँच रुपये माँगे। मम्मी ने सारी बात ध्यान से सुनी परन्तु पाँच रुपयो की माँग सुनते ही चमक उठी। बोली, 'सरला, तुम घूमने जाओ, यहाँ तक तो ठीक है परन्तु पाँच रुपये कहाँ से दूँ ?'

"मम्मी, तुम बडी अच्छी हो। आज तो पाँच रुपये दे ही दो। देखो न ! सारी लडकियाँ रुपये लाएगी और तुम्हारी बेटी कहेगी, हमारे पास पाँच रुपये नही है।" सरला ने चिरौरी की।

"किया क्या जाए ? तुम्हारे पापा के वेतन से खाने-पीने का काम भी मुश्किल से चलता है। मालूम है, घी-शक्कर, तेल, गेहूँ, मिट्टी का तेल जैसी जरूरी चीजें किस भाव मिल रहा है ? कभी-कभी तो ये चीज चोर बाजार से लेनी पडती है।"

"मम्मी यह चोर बाजार कहाँ है ?" सरला ने पूछा।

मम्मी मुस्करायी और बोली, "सरला ! जब बाजार मे कोई चीज खुले आम सबको नही मिले परन्तु भाव से ज्यादा पैसे देने पर दुकानदार छिपाकर ग्राहक को दे दे तो यह चोर बाजारी हुई । मतलब यह है कि बाजार तो वही है परन्तु दुकानदारी मे चोरी है ।"

खेर, चोरबाजारी क्या है, इससे सरला को क्या लेना देना था परन्तु पॉच रुपये का मामला बिगड गया । सरला ने सोचा— पापा के दफ्तर से आने पर उनसे कहेगी, शायद वे दे दे ।

सन्ध्या समय सरला के पापा आए । मम्मी ने चाय के लिए पानी गर्म रखा तो सरला पानी का गिलास ले कर पापा के पास पहुँची ।

गिलास लेते हुए पापा ने पूछा, "आज रानी बिटिया ने कैसे मुँह फुला रखा है ?"

मम्मी ने भीतर से आते हुए कहा, "पॉच रुपये मॉग रही है ।"

पापा ने चमकते हुए पूछा, "क्यो ?"

मम्मी ने ही उत्तर दिया, "इसकी कक्षा की लडकियॉ पिकनिक के लिए जा रही है ।"

पापा चुप रह कर सोचने लगे और मम्मी चाय लाने चली गयी ।"पापा कक्षा की लडकियॉ और बहिन जी क्या कहेगी ?" सरला ने कहा ।

"हूँ, कब देने है रुपये ?"

"लडकियो ने देना शुरू कर दिया है । शनिवार तक देने है ।" सरला को आस बँधी ।

सरला फिर उदास हो गयी । आज उसका गृह-कार्य मे भी मन नही लग रहा था । खाना खा कर वह बिस्तर पर जा लेटी और सोचने लगी कि क्या भगवान फूल पत्तो की तरह पेडो पर रुपये नही लगा सकता ? ऐसा हो जाये तो कितना मजा आये ! फिर मम्मी-पापा से रुपये नही मॉगने पडे और न बडो को महँगाई से डरना पडे । भगवान तो सब कुछ कर सकते है । सोचते-सोचते न जाने कब उसकी ऑख लग गयी ।

सरला ने देखा कि एक मुस्कराता सुन्दर देव उसके सामने खडा है । सरला उसे देखकर डर गयी । देव ने सरला का सिर सहलाते हुए कहा—'सरला ! डरो मत । म तुम्हे नुकसान पहुँचाने नही आया हूँ । तुम्हे रुपयें चाहिए न ?"

सरला की घिग्गी बॅध गयी थी । आवाज नही निकल रही थी । बडी मुश्किल से बोली, "हॉ ।"

"आओ मेरे साथ ।" देव आगे वढा और सरला उसके पीछे चली । घर से कुछ दूर जा कर देव ने सरला को गोद मे लिया और उडने लगा । सरला वहुत भयभीत हो गयी ।

उसने अपनी आँखे वन्द कर ली।

वह सोचने लगी कि पाच रुपये के लालच मे वह न जाने किस मुसीवत म फँस गयी है।

उडते-उडते देव रुके तो सरला ने आँखे खोली। उसने देखा कि सामने ही सा के एक सुन्दर सिंहासन पर वहुत सुन्दर देव वैठा है। सरला को लाने वाले देव न झु कर उसे नमस्कार किया।

"यह कोन है ?" सिंहासन वाले देव न पूछा।

"श्रीमान यह वालिका पाँच रुपये के लिए माता-पिता से रूठ रही थी इसलिए यहाँ ले आया हूँ।"

"अच्छा सुमुख ! इस धन वन मे ले जाओ।" सिंहासन वाले देव न कहा।

सुमुख सरला को एक वाग मे ले गया। वहाँ पेडो पर पत्तो की जगह नाट लग हु थे। किसी पेड पर एक रुपये के नोट थे नो दूसरे पर दो रुपये के, तीसरे पर पाँच नाट थे तो चोथे पर दस रुपये के सो के नोटो वाले पेड भी थे। सरला चकित थी।

सुमुख ने कहा, "सरला, तुम मन चाहे नोट ले सकती हो।"

सरला पहले तो झिझकी फिर वह दस रुपये के नोट वाले एक पेड की ओर बढ़ा नोट असली था। उसने एक नाट पकडा तो वह टूट कर उसके हाथ म आ गया। व खुशी से फूल गयी, पर यह क्या ? उसके हाथ म तो कोरे कागज का टुकडा था। सर ने दूसरा नोट लिया तो फिर वही हुआ। उसने पेड पर लगे नोटो को ध्यान से देख सव ठीक, कही कोई गडवड नही थी। सव सही थे। उसने सोचा, यह उसके लालच फल है। उसे पाँच रुपये ही लेने थे। इस वार वह पांच रुपये के नोटो वाले पेड के पा गयी ओर एक नोट खीच लिया। परन्तु सरला चकित रह गयी। उसके हाथ में फिर कोरा कागज था।

सरला ने सुमुख की ओर देखा तो वह वोला, 'आओ, चलें।" वह सरला को ल कर श्रीमान के पास आ गया ओर उसके साथ घटी घटना सुना दी।

सिंहासन वाले देव ने मुस्करा कर कहा, "कोई वात नही, सरला को रुपये मिलेंगे" फिर सरला से पूछा, "सरला तुम कोई घर का काम करती हो ?"

"हाँ करती हूँ।" अव सरला का भय कम हो गया था।

"क्या-क्या काम करती हो ?"

"झाड़ू लगाती हूँ, पोछा लगाती हूँ, बर्तन साफ करती हूँ, पानी भरती हूँ।"

कुर्सी वाले देव ने खुश हो कर कहा, "बहुत अच्छा। तुम अच्छी बच्ची हो। उस सामने वाले मैदान को साफ कर के बताओगी ?"

देव ने जिधर इशारा किया उधर सरला ने देखा कि वहाँ पेडो से घिरा एक छोटा सा मैदान है जिसमे झडे हुए पत्ते पडे हुए है। सरला मैदान की ओर बढ गयी। उसने एक ओर पडी झाड़ू उठायी और मैदान साफ करने लगी।

पन्द्रह-बीस मिनिट मे वह मैदान साफ हो गया। सरला झाड़ू को एक ओर रख कर देव के पास लौट आयी।

देव ने उसे पास बुला कर उसकी पीठ थपथपाई और पाँच रुपये का एक नोट उसके हाथ पर रखा। "यह पेडो के नोट जैसा नही है, यह असली है।"

सरला ने देखा कि उसके हाथ पर रखा नोट बिलकुल वैसा ही है जैसा उसके पापा दफ्तर से लाते है और जिमसे बाजार से सोदा मिलता है।

देव ने सरला के असमजस को ताड कर कहा, "सरला! बिना मेहनत के मिली चीज पेड़ के नोटो की तरह होती है। यह तुम्हारी मेहनत का फल है। सुमुख, जाओ! बच्ची को छोड आओ।"

सरला को लगा कि देव उसे उसके घर मे ले आया है और बिस्तर पर लिटा दिया है। आँख खोलने पर उसने पाया कि वह सचमुच बिस्तर पर लेटी हुई है। चिडियाँ चहचहा रही है और सूर्य की सुनहरी किरणे खिडकी से आकर उसके मुख पर पड रही है। उसने जल्दी से पाँच रुपये का नोट टटोला। उसे याद था कि देव से लेकर उसने नोट कुर्ते की जेब मे रखा था परन्तु जेब अब खाली थी। वह समझ गयी कि उसने सपना देखा था।



अपना स्वभाव पहचानिए

सतीश कुमार

बच्चो, आप अपने स्वभाव की पहचान नही कर पाते। क्या आप यह जानना चाहते हो ? यदि हॉ, तो यहॉ आपको एक प्रश्न तालिका दी जा रही हे, जिसके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 'हॉ' या 'नही' मे देना हे। वारी-वारी से प्रत्येक प्रश्न पढकर उसके सामने उत्तरवाले खाने मे, 'हॉ' या 'नही' मे से उत्तर चुनकर, सही (✓)का निशान् लगाते जाओ। समस्त प्रश्नो को हल करने के वाद प्रश्न तालिका के अन्त मे दी गयी उत्तर तालिका से अपने उत्तर मिलाओ। अगर आपका उत्तर तालिका वाले उत्तर से मिलता हे, तो प्रत्येक उत्तर को 1 अक दो अन्यथा 0 अक। तत्पश्चात् अपने सभी अक जोड लो। अव उत्तर तालिका के नीचे वर्णित व्याख्यानुसार अपना स्वाभाव पहचान सकते हो।

प्रश्न तालिका

	प्रश्न	हॉ	नही
1	क्या आप अकसर वाहर जाना पसद करते हो ?	☐	☐
2	क्या आप ज्यादा जोखिम वाले कार्य करना पसद करते हो ?	☐	☐
3	क्या आप पहले से योजना बनाकर कार्य करते हो ?	☐	☐
4	क्या आप लवी कतार मे खडे होना नापसन्द करते हो ?	☐	☐
5	क्या आप नये सहपाठी के वारे मे तुरन्त निर्णय ले लेते हो ?	☐	☐
6	क्या आप अकेले बैठकर कुछ सोचना पसन्द करते हो ?	☐	☐
7	क्या आप हमेशा खुशमिजाज दोस्तो का साथ पसद करते हो ?	☐	☐
8	क्या आप वहुधा अपने शौक बदलते रहते हो ?	☐	☐
9	क्या आप गुस्सा जल्दी ठडा कर लेते हो ?	☐	☐
10	क्या आप सदैव छेडछाड करने वाले मित्रो को नापसद करते हो ?	☐	☐
11	क्या आप किसी भी वात पर तुरन्त निर्णय ले लेते हो ?	☐	☐
12	क्या आप नियमित वचत करते हो ?	☐	☐
13	क्या आप नया काम प्रारम्भ करने से पहले उत्साहित रहते हो ?	☐	☐
14	क्या आप प्राय महत्त्वपूर्ण छोटे-छोटे कार्य करना भूल जाते हो ?	☐	☐
15	क्या आप दोस्तो को खूव कहानी, चुटकुले आदि सुनाते हो ?	☐	☐
16	क्या आप नियमित समाचार पत्र पढते हो ?	☐	☐

17 क्या आप मित्रो के पत्रो का जवाब तुरन्त देते हो ? ☐ ☐

18 क्या आप गोपनीय समाचार ज्यादा देर तक छिपाये रख सकते हो ? ☐ ☐

19 क्या आप उधार पैसे लोटाने की चिन्ता करते हो ? ☐ ☐

20 क्या आप कोई खेल खेलने की अपेक्षा उसे देखना पसद करते हो ? ☐ ☐

उत्तर तालिका

1 नही 2 नही 3 हॉ 4 नही 5 नही 6 हॉ 7 नही 8 नही 9 नही 10 हॉ 11 नही 12 हॉ 13 नही 14 नही 15 नही 16 हॉ 17हॉ 18 हॉ 19 हॉ 20 हॉ

अगर आपको 15 से ज्यादा अक मिले हे तब आप अतर्मुखी हो । अतर्मुखी व्यक्ति वह व्यक्ति होता हे जिसकी रुचि स्वय मे होती हे । वह किसी से ज्यादा घुलना-मिलना पसद नही करता हे । वह खाली समय मे बेठकर कुछ सोचना और पढना चाहता हे । वह हर काम योजनाबद्ध और समय पर करना चाहता है वह कम बोलता हे । वह अपने भावो को अपने तक ही सीमित रखता हे । वह आज्ञाकारी, स्वय के लिए चिन्तित, सन्देही एव सावधान होता हे । वह प्रतिक्रियावादी व निराशावादी होता हे, वह अधिक लोकप्रिय नही होता हे ।

अगर आपको 5 या इससे कम अक मिले हे तब आप बहिर्मुखी हो । बहिर्मुखी व्यक्ति वह व्यक्ति होता हे जिसकी रुचि बाह्य जगत मे होती है । वह खुशमिजाज ओर अलमस्त होता हे । वह बाहर घूमना, रोमाचकारी काम करना और दोस्तो का साथ पसद करता है । वह स्वभाव से फक्कड होता हे व किसी चीज की चिता नही करता है । वह धारा-प्रवाह बोलने वाला होता है । वह परिस्थिति के अनुकूल अपने को व्यवस्थित कर लेता हे । वह रूढिवादी व आशावादी होता है । वह अधिक लोकप्रिय होता हे ।

अगर आपको 5 से ज्यादा और 15 से कम अक मिले है तब आप विकासोन्मुखी हो । विकासोन्मुखी व्यक्ति वह व्यक्ति होता है जिसकी रुचि स्वय तथा बाह्य जगत दोनो मे होती हे । वह जीवन की आवश्यकताओ के लिए स्पष्ट निर्णय लेता है । वह एक स्थिति मे अन्तर्मुखी धारणाओ को विचार मे ला सकता है तथा दूसरी स्थिति मे बहिर्मुखी विचारो को अपनी क्रियाओ मे स्थान दे सकता हे ।

बच्चो, आपका स्वभाव कैसा भी हो, इससे कोई फर्क नही पडता । लेकिन यह पहचान लेना बेहतर है कि केसा है आपका स्वभाव, क्योकि इससे भविष्य मे कोई भी काम करने से पहले स्थिति आपको सुविधाजनक लगेगी और आप उलझन मे नही पडोगे ।



पतग

सत्यनारायण सोनी

पाकर डारा का सग
नभ मे उडती
लाल-पीली
रग-विरगी, वल खाता
सुन्दर पतग।

नन्हे हाथो का कमाल
डोरी छूटती
नभ को छूती
पेंच लडाती
फिर कट जाती
ऑखो से ओझल हो जाती
रग विरगी, वल खाता
सुन्दर पतग।

दड-वड, दड-वड
दोड लगात
प्यारे वालक शोर मचाते
फिर होती हे
लूटम लूट
टुकडे-टुकड विखर जाती
फिर भी सवको हरपा जाती
रग-विरगी, वल खाती
सुन्दर पतग।



बापू की कलम

जमनालाल बायती

एक बार बापू को भेट मे प्राप्त कीमती पेन चोरी चला गया। बापू को बडा दु ख हुआ। इसलिए नही कि पेन कीमती था या पन किसने चुराया, पर इसलिए कि दिन भर का कार्यक्रम गडबडा गया। अब तो गाधीजी ने आकर्षक एव कीमती पेन प्रयोग न करने का ही प्रण कर लिया। अपने लिए कलम दवात का प्रयोग ही ठीक समझा।

कलम की निब भी एक बार टेढी हो गई। नई निब की व्यवस्था का काम अन्य कार्यो की भाति मनुबेन को सोपा गया। मनुबेन को निब लाने मे देर हो गई तो बापू ने चाकू की मदद के कलम की दूसरी ओर से छीलना आरम्भ कर दिया, जिससे बास की कलम बन जाए। लोटकर मनुबेन ने गाधीजी से पूछा कि आप यह क्या कर रहे हे ? बापू ने उत्तर दिया—"अब हमारी कलम कभी नही बिगडेगी, निब की भी जरूरत नही पडेगी। हमारे पूर्वज भी तो इसी प्रकार की कलम से लिखा करते थे।"

"पर निब तो मे ले आई।" मनुबेन ने कहा।

"इस निब को बनाने मे कोइ खर्चा नही, अक्षर साफ लिखे जाते हे ओर इसके चोरी जाने का डर ही समाप्त। न यह कलम ही बिगडेगी ओर मूल्य भी बचा ही।" बापू ने कहा।

गाधीजी एक-एक पल का हिसाब रखते थे। एक क्षण भी बिना काम खोना उन्हे रुचिकर नही लगता था। कहते हे, उस कलम से पहला पत्र बापू ने लाड माउण्टबटन को लिखा।



हितैषी

अरनी रॉबर्ट्स

वर्मा सर को चकमा देना आसान तो नही था पर विपिन के लिए यह मुश्किल भी नही था। उपस्थिति लेना जेसे ही समाप्त हुआ, विपिन अपनी सीट से खडा होकर बोला, "हम बाहर जाए ?"

"हम से मतलब ? और फिर बाहर क्यो ?" वर्मा सर ने तीखी दृष्टि से घूरते हुए पूछा।

"सर हमको नाटक की तेयारी मे जाना है—मुझे, मोहित, मजीद और सुरेश को।"

"नाटक ! अच्छा ठीक हे, जाओ।" वर्मा सर के कुछ समझ मे नही आया और उन्होने चारो लडको को जाने की अनुमति दे दी। जबकि विद्यालय मे नाटक, फक्शन या ऐसे किसी कार्यक्रम की कोई तेयारी नही चल रही थी। बाहर आकर वे चारो खूब हस। मजीद बोला—"तेरी बुद्धि की दाद देनी पडेगी यार, विपिन ! क्या आइडिया मारा तूने भी, वरना य वर्मा सर किसी को छुट्टी दे दे ! असम्भव।"

"आज का क्या प्रोगाम हे ?" सुरेश ने पूछा।

"मेरे पास दस रुपये ह मेन पापा की पेट की जेब से उडाए है कल रात। मेरे विचार से नई फिल्म दखने चला जाए।" मोहित ने प्रस्ताव रखा।

"मेने भी हिम्मत करक मम्मी के पर्स से ग्यारह रुपये मार लिए है। ऐसा करते हुए बडा डर लगा पर काम तो बन ही गया।' विपिन ने बताया।

"वेरी गुड हमार साथ रहागे तो ऐसे ही कई गुर सीख जाओगे।" मजीद ने विपिन की पीठ ठोकी।

"मेरे पास पाच रुपये का नोट है—कल सब्जी मगाई थी मम्मी ने, उसी मे से रख लिए थे। —सुरश ने भी अपनी बहादुरी का कारनामा सुना दिया।

चारो लडक बाते करत हुए चोराहे पर आ गए। वे चारो नवी कक्षा मे पढते थे विपिन उनका नया दोस्त था। पहले वह एक सीधा-सादा और पढने मे होशियार लडक था, पर मजीद ओर सुरश की सगत मे आने के बाद उसमे बुरी आदते घर करती ज

रही थी। उसी तरह से रोहित भी उनके जाल मे फस गया था। ये लोग स्कूल से भागकर सिगरेटे पीते, चाट-पकोडी, मिठाई खाते ओर वीडियो पर या सिनेमा हॉल मे फिल्मे देखते। मुजीद के निर्देशानुसार ये लडके अपने घरो से प्राय पेसा चुराकर लाते थे।

"चलो, पहले गरम कचोडिया खा ले।" मजीद ने लालू नमकीन भडार वाले की दुकान की ओर इशारा किया। सबने सहमति मे सिर हिलाया ओर वे लालू की दुकान के बाहर रखी बच पर बेठ गए और चटकारे लेकर कचोडिया खाने लगे। कुछ ही दूर पर पेड के नीचे उन्ही के हमउम्र एक लडके की जूते पालिश करने की छोटी-सी गुमटी थी। वह प्राय एक बजे वहा आकर बेठता था ओर शाम तक जूतो पर पालिश करता था। पालिश करते हुए उस लडके का ध्यान इन चारो लडको पर गया, जिन्हे वह पहले भी देख चुका था—इसी तरह घूमते और खाते-पीते हुए, कभी सिगरेटो का धुआँ उडाते हुए। अब उसको यह बात समझ मे आने लगी थी कि वे लडके स्कूल से भागकर आते है ओर शायद घरो से पेसे भी चुराकर लाते है। ध्यानपूर्वक उनकी बाते सुनने के बाद वह यह भी समझ गया कि मजीद नामक लडके की सगत मे वे बिगड रहे थे।

"दोस्त विपिन ओर मोहित! तुम जरा बडा हाथ मारो। कम से कम बीस रुपये तो लाओ इस बार—फिर हम बगाली मिठाई का आनद उठाएगे ओर बॉक्स मे बेठकर सिनेमा देखेगे।" मजीद ने दोनो लडको के कधो पर हाथ रखके कहा।

विपिन ओर मोहित ने स्वीकृति से सिर हिलाया। इसके बाद वे चारो उठ गए। विपिन ने पेसा चुकाया ओर वे सिगरेटे खरीदने के लिए पान की दुकान की ओर बढ गए। पालिश करने वाला लडका उन्हे जाते हुए देख कुछ विचार करने लगा।

उस रोज विपिन ओर मोहित ही आकर खडे थे—शायद वे मजीद ओर सुरेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे लोग पालिश करने वाले लडके के पास ही पेड की छाया मे खडे थे।

'वे दोनो आते ही होगे—आज हम लोग बगाली मिठाई का मजा लेगे ओर सगम मे नई फिल्म देखेगे"—विपिन ने कहा।

"बहुत बढिया रहेगा यार।"—मोहित ने कहा।

अचानक पालिश करने वाला लडका बोल उठा—"मित्रो! मे बहुत दिनो से तुमसे बात करना चाह रहा हूँ। आज तुम अकेले हो—यह मोका अच्छा है।"

दोनो लडके चोक उठे। विपिन ने कहा—"कोन हो तुम? हम तो तुम्हे जानते तक नही।"

“लेकिन मे तुमको जानता हू—विपिन ओर मोहित ! तुम दोनो अच्छे लडके हो पर तुम्हारे वे दो साथी हे न—मजीद ओर सुरेश, उनकी सगत मे तुम बिगड रहे हो। मे कई दिनो से तुम्हारी बाते सुन रहा हूँ। कितनी बुरी बात है कि तुम घरो से पैसा चुराकर लाते हो, स्कूल से भागकर खाते-पीते हो, सिगेरेटे फूकते हो और सिनेमा देखते हो। अपने माता-पिता के साथ तुम धोखा कर रहे हो। तुम इन लडको का साथ छोड दो ओर अपनी पढाई पर ध्यान दो।” वे दोनो उसकी बात सुनकर आश्चर्य चकित रह गए। सहसा विपिन बोला—“तुम्हे हमसे मतलब ? हम पालिश करने वाले गवार लडके के मुह लगना नही चाहते।”

“मुझे गलत मत समझो मित्रो ! मे तुम्हारा हितैषी हू। मेरा नाम मोहन है। मेरी सलाह मान लो ओर अच्छे लडके बनो।”

“चल-चल बडा आया उपदेश देने वाला। अपने को तो देख। जूता पालिश करने वाला लडका चला हे हमे समझाने।”—मोहित ने घृणा से कहा।

“खबरदार जो तूने हमसे बात की तो।”—विपिन ने ऑखें निकाल कर उसे डाटा। इसी बीच मजीद ओर सुरेश आ गए और दोनो को साथ लेकर चले गए।

पन्द्रह दिनो बाद वे चारो लडके लालू की दुकान पर चाट-पकौडी खा रहे थे। अचानक मजीद की दृष्टि विपिन की कमीज की फूली हुई जेब पर गई। उसने पूछा—“लगता हे आज तो जेब मे काफी माल हे।”—यह कहकर उसने जेब पर हाथ मारा।

विपिन ने जेब पर हाथ रखते हुए कहा—“यह पेसा पापा ने बिजली के बिल की राशि चुकाने के लिए दिया है।”

“अरे यार, कह देना कि पेसा खो गया।”—मजीद उससे पेसा छीनने लगा। विपिन को बडा गुस्सा आया। उसने मजीद को एक ओर धकेल दिया। यह देखकर सुरेश भी आ गया। अब मजीद ओर सुरेश मिलकर विपिन को पीटने ओर पेसा छीनने का प्रयास करने लगे। मोहित बचाने आया तो उसकी भी पिटाई होने लगी।

शायद विपिन का पेसा छीनने मे वे सफल भी हो जाते, पर उसी समय झपटता हुआ मोहन वहा आ गया। उसने मजीद ओर सुरेश को धक्का देकर अलग किया ओर दोनो लडको को बचाया। अपने से ताकतवर मोहन से घबरा कर वे वहा से चलते बने।

मोहन ने कहा—“मेने तुम लोगो से कहा था न कि ये लडके खराब हे, तुम इनकी

-सगति छोड दो। देखो, आज तुम किस सकट मे पड गए। उन्हे तुमसे नही, तुम्हारे पेसो से दोस्ती है। वे तुम्हे चोरी करना और स्कूल से भागना सिखा रहे है।"

विपिन और मोहित की ऑखो मे ऑसू आ गए। भर्राए गले से विपिन बोला—"हमे क्षमा कर दो ! दोस्त ! तुमने हमें बडी मुसीबत मे पडने से बचाया। हमे पता नही था कि वे धूर्त लडके है। हमने तुम्हे गरीब समझकर तुम्हारा अपमान किया था। हमे माफ कर दो और अपना मित्र बना-लो।"

मोहन ने मुस्करा कर विपिन और मोहित से हाथ मिलाया और स्नेह से उनके कधों पर हाथ रखके कहा—"मे भी तुम्हारे जैसा ही विद्यार्थी हू। मेरे पिताजी की मृत्यु हो गई। मेरी मा सिलाई करके मेरा भरण पोषण करती है। पर कुछ दिनो से वह बीमार हे, अत घर का खर्चा चलाने के लिए मै जूता पालिश करने का काम करता हू। मै नवी कक्षा मे पढता हू।"

मोहन की बात सुनकर विपिन और मोहित आश्चर्य चकित रह गए। विपिन बोला—"तुम्हारे जेसा मित्र पाकर हम धन्य हो उठे। अब हम अच्छे लडके बनेगे ओर मन लगाकर पढेगे।" मोहन भी उन्हे मित्र के रूप मे पाकर बहुत प्रसन्न था।



दोहरी भूल

बजरंगलाल जेठू

उस दिन अनु अपने मम्मी-पापा के साथ घूमने गई थी। घूमने क्या, बस समझ घर वाले सब पिकनिक पर गए थे। अनु सबसे छोटी थी घर मे, पर बहुत बातूनी थ और शरारती भी थी। वह अपने बडे भाई सूरज और बडी बहन टीनू की तो कोई बात मानती ही नही थी। अपने मम्मी-पापा से भी अपनी बातो मे जिद कर लेती थी।

पिकनिक स्थल पहुचते ही अनु ने उस दिन भी अपनी शरारतो से व बातून स्वभाव से सभी लो ।। को परेशान करना शुरू कर दिया। बगीचे मे कभी किसी पौ को मोडकर तोड देती तो कभी किसी छोटे पेड पर चढ कर उसकी टहनी को पैर तोड डालती या फिर उसके बहुत से फूल अनावश्यक रूप से तोडकर उन्हे इधर उध फैक देती।

पिकनिक पर आए दूसरे लोग उसकी शरारतो वे बेमतलब मचाए जा रहे शोर स नाराज हो रहे थ। बगीचे का माली तो उसके मम्मी-पापा को बगीचा छोडकर चले जान को कहने का मानस भी बना चुका था। दूसरी पिकनिक मडलियो के वार्तालाप एव कार्यक्रमो मे भी विघ्न पड रहा था। अनु के मम्मी-पापा एव उसके भाई-बहन भी बड परेशान थे।

उसी समय बगीचे मे एक फोटोग्राफर भी अपनी पसद के चित्र ले रहा था। पिकनिक पर आने वाले लोग उससे फोटो खिचवा रहे थे। फोटोग्राफर अनु की गतिविधियो स भी अनभिज्ञ नही था। अनु भी अन्य लोगो की तरह फोटो खिचवाने के लिए फोटोग्राफर के पास पहुच गई। फोटोग्राफर ने हामी भर दी। सभी लोग पेडो की पृष्ठभूमि मे फोटो खिचवा रहे थे। फोटोग्राफर ने अनु को भी एक छोटे से पेड के पास खडे होने का इशारा किया। अनु ने रुआसी होकर कहा, "इस पेड की टहनियॉ तो टूटी हुई व इधर-उधर मुडी हुई हे। इससे तो मेरा फोटो खराब आएगा। उधर दूसरी तरफ चलकर दूसरे पेड के पास फोटो ले ले न, अकल।"

फोटोग्राफर अनजान बनते बडबडाया "अहो। किस अशिष्ट बच्चे ने ऐसा किया

है, पेड की सारी टहनियाँ तोड-मरोड दी। पेड-पोधो को नुकसान पहुचाने से उस स्थान की सुन्दरता तो नष्ट होती ही हे, आसपास के वातावरण पर भी बुरा प्रभाव पडता है। पर्यावरण का असतुलन वढता हे। प्राणवायु की कमी से वायु प्रदूषण का प्रभाव भी वढ जाता हे।" ओर अपना कैमरा अनु पर फोकस करने लगा।

अनु को ये वाते सुनकर मन ही मन बडा पश्चात्ताप हुआ। परन्तु उसने अपने मन की वात को छुपाते हुए फिर कहा, "सुनिए, फोटोग्राफर अकल ।"

अनु की वात को वीच मे ही काटकर केमरे की अनु पर फोकस करने का अभिनय करते हुए फोटोग्राफर ने फिर कहा, "देखो वेटी, तुम इस तरह से बराबर वोलती रही तो तुम्हारी फोटो खराव आ जाएगी। मुझे दोष मत देना यदि कही ऑख बद, मुह खुला या हाथ टेढा आ गया तो। वैसे ज्यादा बोलना अच्छी बात नही है। अपने आसपास के लोगो की वातचीत मे इससे वाधा पडती हे। तुम्हे मालूम होना चाहिए कि शोर प्रदूषण भी वहुत नुकसान करता हे। अपने द्वारा किए जा रहे अनावश्यक शोर से पास के किसी हृदय रोगी को परेशानी हो सकती है, स्वय को भी सिरदर्द हो सकता हे।"

अव तो अनु को अपनी दोहरी भूल पर भारी शर्म आयी। वह एकदम चुप हो गई। फोटोग्राफर ने अगुली का इशारा कर अनु को अपनी तरफ वुलाया और पेडो के एक झुरमुट के पास कुर्सी पर खडी होने को कहा। फिर बोला, "अपनी अगुली को मुह पर लगा लो—यह सोचकर कि अब कभी अनावश्यक व जोर से नही वोलूगी।"

फोटो खिच गई। अनु फोटोग्राफर के पास आकर धीरे से बोली, "अकल! अब कभी भी अनावश्यक नही बोलूगी, न ही पेड-पौधो को नुकसान पहुचाऊगी। उस पेड की टहनियो को भी थोडी देर पहले मेने ही तोडा-मरोडा था। मुझे अपनी दोनो भूलो पर दु ख है।"

इतने मे अनु के मम्मी-पापा व अन्य लोग भी उधर आ गए। सभी उसकी बाते सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। ओटोमेटिक कैमरे से तुरन्त रगीन फोटो तैयार होकर आ गई। इस खुशी मे फोटोग्राफर ने वह फोटो तोहफे के रूप मे अनु को देदी। अनु ने धीरे से कहा—"अकल, इसे मे अपने कमरे मे लगाऊगी ताकि हमेशा आज की याद आती रहे।" सभी खुश होकर हस पडे।



तीन बरसाती क्षणिकाएं

जितेन्द्रशकर धजाड़

बरखा रानी चली मदरसे रिमझम रिमझिम रटती।
सूरज की किरना बेटी से उसकी तनिक न पटती।।
उनकी हुई आपस मे कुट्टी।
पढने की भी हो गयी छुट्टी।।

बदरा दादा, पहन लबादा दोडे, झगडे, डॉटे।
सोने की डोरी से नम को आडा, टेढा बाटे।।
लेकिन हुआ नही बॅटवारा।
पानी फैल गया यूँ सारा।।

नया घोषणा पत्र सुनाता मेढक पोखर-पोखर।
लेकिन इस पावस चुनाव मे खाई ऐसी ठोकर।।
मिला मछली को जल का राज।
बन्द हुई मेढक की आवाज।।



अनुचित होड़

छीतर लाल साँखला

पॉच बच्चे भरी दुपहरी मे पॉच किलोमीटर दूर स्थित एक आम के पेड की ओर बढे जा रहे थे। एक ही बच्चा जूते पहने हुआ था, बाकी चार नगे पाव तपती सडक पर दाझ रहे थे। जूते वाला बच्चा निरन्तर चले जा रहा था परन्तु नगे पॉवो वाले चारो बच्चे कुछ दूर चल कर कुछ देर तक पेड की छाया मे जा बेठते थे।

रास्ते मे उन्हे एक भला मनुष्य मिल गया। बालको के फफोले पडे पॉवो पर उसे दया आ गई। चारो के लिए उसने चार जोडी जूते दे दिए। अब तो वे बच्चे भी अकडकर बिना किसी डर के सडक पर तेज चाल से चलने लगे। पॉचो बच्चो का कदम से कदम मिलाकर एक साथ चलना बहुत अच्छा लग रहा था। देखने वाले उनकी कदमताल की प्रशसा किए बगैर रह नही सकते थे।

तभी एक राहगीर गुजारा। उसके माथे पर रखी पोटली मे से छोटे-छोटे चार पहिए नीचे गिर पडे। इन पर सिर्फ एक ही बच्चे की नजर थी। उसने झट उठा लिए। चुपचाप राहगीर गुजर गया। तब उस बालक के दिमाग मे विचार आया कि अगर इन पहियो को जूतो मे फिट कर लिया जाए तो वह सबसे पहले आम के पेड तक पहुँचकर ज्यादा आम तोड सकता था। उसने वही किया। पहिए लगे जूतो से शीघ्र सबसे आगे निकल गया। उसे आगे निकला देख दूसरे बच्चे भी आगे निकलने की तिकडमे भिडाने लगे।

एक ओर राहगीर उन्हे मिल गया। उसके पास एक नई साइकिल थी। चारो बालको ने उसे रोककर साइकिल छीननी चाही। अत घूसेबाजी शुरू हो गई इस जग मे एक बालक तथा वह राहगीर मारा गया। शेष तीन बालक भी एक साइकिल के लिए झगडने लगे। एक-एक कर दो और मारे गए। विजेता बालक साइकिल पर सवार होकर सडक पर हवा हो गया। आगे निकल पहियो वाले बालक ने पीछे मुडकर देखा तो उसका साथी साइकिल पर सवार हो आ रहा था। वह सोचने लगा कि यह पहले पहुँच कर सारे आम तोड लेगा। अत पहियो वाला बालक उसे रोकने के उद्देश्य से सडक के बीच खडा हो गया। साइकिल सवार बालक तेज गति से आ रहा था। अत साइकिल उस सडक बीच खडे बालक को कुचलती हुई कुछ दूर आगे एक ओर गहरे गड्ढे मे जा गिरी।

दोनो बालको की रीढ की हड्डियाँ टूट गई थी। भरी दुपहरी मे कुछ ही दूर पडे

दोनो बालक जोर-जोर से कराह रहे थे। आम खाना तो दूर, उस समय तो वे अंजुलि भर ठण्डे पानी को भी तरस रहे थे। उनके दिमाग मे रह-रह कर एक ही वात आ रही थी कि काश, वे पाँचो साथी साथ-साथ ही चले होते।



सारा भारत एक है

बृजभूषण चतुर्वेदी "बृजेश"

एक हमारी मजिल सबकी, और रास्ता एक है।
'काश्मीर' से रामेश्वर तक सारा भारत एक है।।
अलग-अलग हो भाषा चाहे, अलग-अलग हो वोलियाँ।
अलग-अलग हो आँगन चाहे, मगर एक रगोलियाँ।।
क्रिसमस हो चाहे वैशाखी, हो दीवाली या राखी,
सबको गले लगाती आकर, यहाँ ईद और होलिया।।
एक धरा है, एक गगन है, और पवन भी एक है।
काश्मीर से रामेश्वर तक, सारा भारत एक है।।
गिरजाघर मे करे प्रार्थना, या मस्जिद मे पढ़ें अजान।
गुरुद्वारे मे माथा टेके, या मदिर मे प्रभु का ध्यान।।
अलग-अलग है पूजा के ढग, अलग-अलग है आराधन,
चाहे जितने नाम पुकारे, मगर एक सबका भगवान।
भेद सभी नीचे वालो के, ऊपर वाला एक है।
काश्मीर से रामेश्वर तक, सारा भारत एक है।।
जाति, धर्म, भाषा-भाषी, पहले है हम भारतवासी,
दुनिया की नजरो मे अपनी, एक यही पहचान है।।
एक राष्ट्र है, एक ध्वजा है, राष्ट्र गान भी एक है।
काश्मीर से रामेश्वर तक, सारा भारत एक है।



सपने नव उत्थान के

नमोनाथ अवस्थी

हम भारत के बालक, हम है सूरज हिन्दुस्तान के।
कदम मिलाकर साथ बढाएँ, सपने नव उत्थान के।।
श्रम जीवन का ध्येय हमारा
मेहनत करके खाएगे।
कर्त्तव्य ओर सकल्प हमारे
सासो मे घुल जाएगे।।

घर घर ज्योति जलेगी, बादल छट जाएं अज्ञान के।
कदम मिलाकर साथ बढाए, सपने नव उत्थान के।।
भाति-भाति के फूल खिलेगे
अपने इस उद्यान मे।
हम माली हे इस बगिया के
शोभित रहें जहान मे।।

पर हमको कमजोर न समझो, बेटे सभी जवान के।
कदम मिलाकर साथ बढाए, सपने नव उत्थान के।।
हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई
एक वृक्ष की साख है।
राष्ट्र एकता बढा न पाए
तो जीवन भर राख है।।

परचम आज उठाए मिलकर गोरवशाली आन के।
कदम मिलाकर साथ बढाए सपने नव उत्थान के।।



एकता

रामजीलाल घोड़ेला 'भारती'



तनिक-तनिक सा अन्न जुटाकर,
देखो चीटी बिल भर लेती है।
लघु-लघु बूँदो को भी तो देखो,
जो सागर को भी भर देती है।।

छोटे-छोटे तिनको से भी तो,
देखो मोटा रास्ता बन जाता हे।
जिसमे बँधकर हाथी भी तो
कुछ भी न हमारा कर पाता हे।।

मिल-जुल कर हम सब भारतवासी,
महान राष्ट्र सेवा कर सकते है।
अपने सेवा कार्य से ही तो हम
ओरो का दु ख हर सकते हे।।

दुनिया की प्रगति को भी देखो,
अपने विकास का भी ध्यान करो,
जो अपने आपस मे हे बटे हुए,
उन सबको भी तुम एक करो।।

□



जैसा राजा वैसी प्रजा

मन्दाकिनी काले

एक समय एक राजा राज्य करता था। उसकी प्रजा सुखी थी। लोगो को खाने, पहने, रहने की कोई परेशानी नही थी। सब अपनी-अपनी पसन्द के उद्योग-धन्धे करते थे। न जमीन के झगडे, न कर्जदारी की चिन्ता। सभी प्रजाजन परिश्रम करते। दिन रात निश्चिंत सोते। चोरों उच्चक्को तक का डर नही था।

एक दिन अचानक राज्य पर दु ख का पहाड टूट पडा। राजा एकाएक चल बसा। उसकी मृत्यु के बाद उसका बेटा गद्दी पर बैठा। पर वह अपने पिता की तरह योग्य न था। उसे राजनीति मे रुचि न थी, न वह इतना चतुर था कि राज्य के मत्रियो की बात समझे। उसने सारा राज-काज पिता के मत्रियो के भरोसे छोड दिया। मत्रियो व उनके सहायको ने उसकी खुशामद करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे नया राजा केवल हस्ताक्षर करता, बाकी प्रजा के हित-अहित के सारे कार्य मत्री करते। मत्रियो मे भी धीरे-धीरे स्वार्थ पनपता गया। वे अपना-अपना घर भरने लगे। कर वसूली तो प्रजा से कर लेते पर प्रजा तक उसका लाभ या प्रजा हित के कार्य नही करते। उल्टा हिसाब ऐसे रखते जैसे प्रजा के लिए ही खजाना खाली हे

देखते-देखते सालों पर साल गुजरने लगे। प्रजा का कोई रखवाला नही रहा। राजा के मत्री, नौकर, थानेदार, कोतवाल, कर्मचारी, यहा तक कि वैद्य-हकीम भी अपना मुनाफा सोच कर कार्य करते, चाहे जनता को कितने ही कष्ट उठाने पडे। छोटे-से-छोटे काम करवाने के लिए रिश्वत देनी पडती। सफाई कर्मचारी भी तभी सडक साफ करते जब सडक किनारे रहने वाले अलग पैसा देते। नही तो सडको के किनारे गन्दगी के ढेर के ढेर वेसे ही पडे रहते। कोई कहने वाला नही, कोई सुनने वाला नही। चारो ओर मनमानी का राज्य, कोई अनुशासन नही रहा।

प्रजा सोचती कि ऐसा कब तक चलेगा। हे भगवान, कोइ रास्ता दिखाओ। मुहल्ले-मुहल्ले मे चर्चा होने लगी, इस अराजकता की। अन्त मे एक दिन कुछ बुजुर्ग व अनुभवी लोग मन्दिर के प्रागण मे इकट्ठे हुए। उन्होन सलाह मशविरा किया।

दूसरे दिन सुबह ही सुबह लोगो ने देखा कि आठ-दस बुजुर्ग-प्रोढ व्यक्ति सडको का कचरा इकट्ठा कर रहे थे। उनकी देखा-देखी अन्य मुहल्लो के लोगो ने भी सफाई-आन्दोलन मे भाग लेना शुरू कर दिया। यह कार्यक्रम लगातार, दस-पन्द्रह दिन तक चलता रहा। ये बुजुर्ग विना किसी शिकायत के शान्त भाव से अपना कार्य करते रहे। नोजवानों को भी शर्म आने लगी। उन्होने घर-घर जाकर लोगो को समझाया कि कूड़ा-कूडेदान मे डाले। वच्चो को नालियो मे पाखाना करने न वैठाए नालियो मे पानी डाले।

अब सफाई कर्मचारियो की क्या आवश्यकता ? सडके साफ। नालिया साफ। इन लोगो की ऊपरी आय बन्द हो गई।

प्रजा को धीरे-धीरे अपने-अपने कर्त्तव्यो ओर अधिकारो का ज्ञान होने लगा। लोग गलत काम न स्वय करते, न करने देते। अनुशासन की समस्या नही रही। लोग आवश्यकता से अधिक न सग्रह करते न करने देते। इस तरह धीरे-धीरे करते सभी लोग सुधरने लगे। प्रजा फिर से सुख का अनुभव करने लगी। सच है—प्रजा जागरूक होती है तो राजा भी जागरूक होता हे। राजा जैसा होगा वेसी की प्रजा होगी।



मोती

भगवती लाल व्यास

एक था पिल्ला। नाम था मोती। मोती बडा भोला-भाला। प्यारा-सा रग रूप। मोती जैसा ही गोल-मटोल। मोहल्ले के सब बच्चे उसे बेहद चाहते थे। कोई उसे गोद मे उठा लेता। कोई उसके लिए अपने घर से रोटी ले आता तो कोई दूध। मोती भी सबसे हिल-मिल गया था। दोस्तो का दोस्त मोती।

तभी इस मोहल्ले मे आया सतीश। सतीश पास के कस्बे सीतापुर का रहने वाला था। यहाँ उसका ननिहाल था। सतीश भी मोहल्ले के बच्चो के साथ खेलने जाता। खेल-खेल मे ही उसका परिचय मोती से भी हुआ। पर वह मोती को बिलकुल नही चाहता था। दूसरे लडको की नजर बचा कर वह मोती को परेशान करता। कभी उसे उठा कर नीचे पटक देता। जब दर्द से चीखता हुआ मोती भागता तो सतीश को बडा मजा आता। कभी वह मोती को नाली मे फेक देता। मोती कीचड मे भीग जाता और ठण्ड के मारे 'को को ' करने लगता तो सतीश ताली बजाता हुआ भाग खडा होता। दूसरे बच्चे कभी-कभार मोती की यह दुर्दशा देख लेते तो उन्हे बडा अफसोस होता। सतीश उनसे उम्र मे बडा था। डील-डौल मे भी ताकतवर। और फिर उसका ननिहाल गाव के मुखिया के यहा। इन्ही सब कारणो से बच्चे सतीश की हरकतो का खुल कर विरोध नही कर पाते थे।

मगर गणेश को सतीश की कारगुजारिया बिलकुल नही सुहाती थी। गणेश ने एक दिन सतीश को साफ-साफ कह दिया—"सतीश, तुम मोती को परेशान क्यो करते हो, तुम्हारी उससे क्या दुश्मनी है ? क्या मिलता है तुम्हे मोती को परेशान करके ?"

गणेश की दो टूक बात पर सतीश का पारा चढ गया। वह तमक कर बोला—"दुश्मनी नही, है पर तुम्हारी तरह उससे दोस्ती भी नही है। तुम सब गद लडके हो। हमेशा उस पिल्ले को उठाये-उठाये फिरते हो। ऐसा क्या है उसमे ? मै उस पिल्ले को तुम्हारी तरह उठाये-उठाये नही फिर सकता।"

गणेश और सतीश की गरमागरमी चल ही रही थी कि कुछ बच्चे और आ गए।

गोपी ने कहा—"ठीक है सतीश, अगर तुम्हे मोती अच्छा नही लगता तो तुम उसे उठाये-उठाये मत फिरो मगर उसे उठा कर वेरहमी से पटका तो न करो। कोई तुम्हे भी इस तरह उठा कर पटक दे तो ?"

"क्या कहा ? मुझे उठा कर पटकने वाला कौन है ?"—कहते हुए सतीश गोपी से भिड गया। गोपी दिखने मे दुबला-पतला था पर ताकतवर निकला। उसने देखते ही देखते सतीश को चित्त कर दिया। सतीश की सारी हेकडी निकल गई। तमाशा देखने वाले बच्चे सतीश की हार पर मन ही मन खुश हो रहे थे। गणेश ने बीच बचाव कर सतीश और गोपी को छुडाया। रुआसा होकर सतीश अपने ननिहाल की ओर चला गया।

इस घटना से सतीश का बडा अपमान हुआ था। उसने सोचा, सारे फसाद की जड यह पिल्ला है। कल इससे निपट लूँगा।

अगले दिन दोपहर मे जब गली मे सन्नाटा था, सतीश घर से निकला और मोती को उठा कर गाव के बाहर एक कुए मे फेक आया। उसने सोचा कि मोती पानी मे डूब जाएगा और किस्सा खत्म हो जाएगा।

पर मारने वाले से बचाने वाला बडा होता है। जिस कुए मे सतीश ने मोती को फेका था वह ज्यादा गहरा नही था और उसमे पानी तो बिलकुल था ही नही।

शाम को जब बच्चे गली मे इकट्ठे हुए तो मोती कही दिखाई नही दिया। सब परेशान होकर मोती को इधर-उधर ढूढने लगे, पर मोती वहाँ कही नही मिला। मिलता भी कैसे। गणेश और गोपी मोती को ढूढते-ढूढते गाव के बाहर आ गए। उन्हे मोती की आवाज सुनाई दी। मोती दर्द से कराह रहा था।

जिधर से आवाज आ रही थी, गणेश और गोपी उधर ही बढ गए। उन्होने कुए मे झाक कर देखा। उनका प्यारा मोती ही था। बार-बार खडा होने की कोशिश करता और नीचे गिर पडता। गणेश समझ गया कि मोती की टाग टूट गई है शायद।

गोपी बोला—"गणेश, हमारे मोती को यहाँ किसने ला पटका ?'

"यह समय इन बातो मे गवाने का नही है गोपी, हमे पहले मोती को बाहर निकालना चाहिए।"—कहता हुआ गणेश फुर्ती से कुए मे उतर गया और मोती को निकाल लाया। सचमुच मोती की टाग मे काफी चोट आई थी। उसकी आखो मे पीडा के कारण आसू थे। अपने मोती की यह दशा देख कर गोपी और गणेश की आखे भी भर आई।

दोनो उसे घर ले आए। उसकी जख्मी टाग पर सेक किया। गरम-गरम दूध पिलाया।

मोती को बडी राहत महसूस हुई।

उधर सतीश सोच रहा था कि अव तक तो मोनी पानी मे डूब चुका होगा। अगर किसी ने पूछा भी तो वह कह देगा—उसने मोती को गाव से बाहर जाते देखा था। इससे ज्यादा उसे कुछ नही मालूम।

उसी दिन सतीश के पिताजी आ गए। सतीश से तैयार होने को कहा और बोले—"कल सुवह चलना है।" सतीश भी यही चाहता था। अगर किसी को मोती वाली घटना का पता चल गया तो सब उसी का नाम लेगे। अगले दिन सतीश अपने पिताजी के साथ वस स्टैण्ड की तरफ रवाना हुआ। तभी सामने से मोती आता दिखाई दिया। लगडाता हुआ चल रहा था। पट्टी वधी थी उसके अगले पाव मे।

सतीश को देख कर मोती घबरा-सा गया। वह एक तरफ भागने लगा। सतीश को पहली बार यह लगा कि उसने जो कुछ मोती के साथ किया, वह गलत था। गणेश और गोपी ठीक ही कहते थे। उसका मोती ने क्या बिगाडा था। फिर विना कारण ही उसने मोती को किस वात की सजा दी।

अचानक सतीश के मुह से निकला—"मोती!" ओर मोती डरा-डरा सा भागते-भागते रुक गया क्षण भर को। पशुओ मे न जाने केसी शक्ति होती हे कि मनुष्य के मन मे छुपी नफरत या प्यार की थाह फौरन पा लेते है।

मोती ने एक बार सतीश की ओर दुविधा से देखा, मानो पूछ रहा हो—फिर से मुझे कुए मे तो नही फेकोगे? सतीश ने फिर कहा—"मोती!" इस बार मोती को यकीन हो गया कि इस आवाज मे नफरत नही प्यार है। मोती लौट पडा ओर सतीश के पास आकर अपनी छोटी-सी दुम हिलाने लगा।

सतीश के पिताजी ने कहा—"बडा प्यारा पिल्ला है। न जाने किस निर्दयी ने तोड दी बेचारे की टाग? अव पता नही यह ठीक भी होगी या इसे पूरी जिन्दगी इसी तरह लगडाते-लगडाते चलना पडेगा।"

दूर धूल उडती दिखाई दी ओर बस की घरघराहट भी सुनाई पडी। सतीश के पिताजी ने कहा—"सतीश, जल्दी चलो बेटे, बस आ गई हे शायद।" सतीश जल्दी-जल्दी चलने लगा। मोती भी पीछे हो लिया पर ज्यादा नही चल पाया अपने घायल पाव से। वही बेठ गया।

सतीश मन ही मन प्रार्थना करने लगा—"हे भगवान, मोती की टाग को जितना जल्दी हो सके, अच्छी कर देना।" □

चिट्ठी

हरिवल्लभ वोहरा 'हरि'

गाव-शहर का भेद मिटाती ।
समाचार सुख-दुख का लाती ।।
कितनी प्यारी चिट्ठी, कितनी प्यारी चिट्ठी

राखी का धागा पहुचाती ।
भाई बहन मे प्यार बढाती ।।
कितनी प्यारी चिट्ठी, कितनी प्यारी चिट्ठी

दीवाली का सन्देश सुनाती ।
अधियारे को दूर भगाती ।।
कितनी प्यारी चिट्ठी, कितनी प्यारी चिट्ठी

होली के रग मे रग जाती ।
क्रिसमिस नया साल सग लाती ।।
कितनी प्यारी चिट्ठी, कितनी प्यारी चिट्ठी

घर बेठे सब काम कराती ।
दूरी को यह सदा मिटाती ।।
कितनी प्यारी चिट्ठी, कितनी प्यारी चिट्ठी

प्यार विदेशी भी ये लाती ।
सगी-साथी दोस्त बनाती ।।
कितनी प्यारी चिट्ठी, कितनी प्यारी चिट्ठी



बचत मेला

शिवचरण मन्त्री

स्कूल की छुट्टी हुई। अर्चना घर आई। घर आकर उसने बस्ते को अपने स्थान पर रखा ओर खेलने को गली मे चली गई। खेल कर लौटी तो शाम हो गई थी। मै खाना खाकर बैठा ही था। जैसे ही वह आई, बोली, "आज हम सब 'बचत मेले' मे गए थे। वहा पर अपने पडौसी शर्माजी भी थे। वे रुपये गिन रहे थे। कुछ और आदमी भी थे। वे भी कुछ ले दे रहे थे। पर मे यह नही समझ सकी कि यह 'बचत मेला' क्या हे ? क्यो लगाया गया ? लोग इस मेले मे क्या खरीद बेच रहे थे ?"

"बचत मेले मे लोग बचत पत्र खरीद रहे थे।" मेने कहा।

"बचत पत्र क्यो खरीदे जा रहे थे ?" बचत तो सभी करते हे। मेडम ने भी बताया था कि बुरे समय या आगे की कठिनाई के हल के लिए बचत करनी चाहिए। पर बचत पत्र ?" अर्चना ने जिज्ञासा से पूछा।

"तुमने ठीक कहा कि बचत करनी चाहिए। बचत करने खुद के आडे समय मे लाभ होता है। पर बचत पत्र खरीदने पर हमारी बचत देश के काम मे आती है।"

"देश को बचत की क्या आवश्यकता हे ? देश की आय का कोई ओर-छोर नही ? वह रुपया छाप सकती हे। लोगो से रुपया ले सकती हे, आदि।"

"तुमने पते की बात कही, पर यह भूल गई कि देश को अपनी आय मे कई प्रकार के खर्च भी करने पडते है—यथा, सेना का खर्च, योजनाओ पर खर्च, सामाजिक कल्याण के कार्यो पर खर्च। इस प्रकार सरकार को कई प्रकार के खर्च करने होते है। इन खर्चो के कारण विकास की योजनाओ पर खर्च करने को रुपया कम रहता हे और विकास योजनाओ पर खर्च करना आवश्यक होता हे। इस कारण सरकार बचतो को बढावा देने के लिए 'बचत मेले' लगवाती है और आम आदमी को बचत मे भागीदार बनाना चाहती हे।"

"आम आदमी के भागीदार होने से विकास योजनाओ पर क्या प्रभाव होगा ? अर्चना ने प्रश्न किया।

"आम आदमी भी इस प्रकार से योजनाओ से जुड सकेगा। अपना पेसा योजनाओ मे लगा होने से उसे योजनाए अपनी लगेगी। वह परोक्ष रूप से इन योजनाओ मे भागीदार होने का अहसास करेगा। इससे योजनाए सफल होगी।

सामाजिक कल्याण बढेगा। देश का विकास होगा। खुशहाली बढेगी। लोगो का जीवन स्तर उन्नत होगा।"

"पर सरकार इन योजनाओ के लिए ऋण भी ले सकती है। दूसरे देशो से भी उधार लिया जा सकता हे।"

"हा, उधार लिया जा सकता है। सरकार ने विदेशो से उधार लिया भी है। यथा 'विश्व बैक', 'अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष' आदि सस्थाओ से ऋण लिया जाता रहा है। पर इनको रुपया लौटाना भी तो पडता है। वह भी ब्याज सहित। इनके सिवाय विदेशो या विदेशी सस्थाओ से उधार लेने पर उनकी कई शर्ते भी मानने को बाध्य होना पड सकता है। इसके सिवाय उनको रुपया उनकी मुद्रा मे अर्थात विदेशी विनिमय द्वारा चुकाना पडता है। इससे देश को नुकसान होता है। देश मे ही यदि ऋण प्राप्त किया जाए तो इससे भी इतना अधिक धन नही मिल सकता है जितना अल्प बचतो से मिल जाता हे।"

"यह कैसे ?" अर्चना ने सहजता से प्रश्न किया।

"तुमने सुना होगा कि कहावत हे बूद-बूद से घट भर जाता है। कण कण करके मण जुड जाता है। बालू का एक एक कण लहलहाते वन को मरुस्थल बना सकता है, इसी प्रकार एक एक लकडी करके पूरा लकडी का गट्ठर वन जाता है। तदुपरान्त कोई भी काम जल्दी मे सम्भव नही। कोई भी देश थोडे समय में आगे नहीं बढ सकता है। इसके लिए आवश्यकता होती हे निरन्तर प्रयासरत रहने की। कछुआ अपनी मद किन्तु सतत एक-सी गति से दोड जीत लेता हे। अत अल्प बचत से देश की प्रगति आसानी से की जा सकती हे। उदाहरण के लिए यदि तुम्हारे विद्यालय की प्रत्येक लडकी से एक एक रुपया लिया जाए तो पाच सो रुपया आसानी से एकत्रित किया जा सकता है। यदि इसके लिए एक या कतिपय छात्राओ को कहा जाए तो बहुत कठिनाई होगी। इसी प्रकार यदि देश मे विद्यार्थी समुदाय की सख्या पन्द्रह प्रतिशत भी मानी जाए तो अल्प वचत मे दो करोड रुपया आसानी से प्राप्त किया जा सकता हे।"

"अल्प बचत के क्या तरीके है ?"

"अल्प बचत के कई तरीके हे यथा राष्ट्रीय बचत पत्र, राष्ट्रीय बचत योजना, इन्दिरा विकास पत्र, किसान विकास पत्र, डाकघर मासिक योजना, तीन व पाच वर्षीय सावधि योजना, डाकघर आवर्ती जमा योजना आदि। इन सब पर केन्द्र सरकार अच्छा ब्याज देती हे ओर राज्य सरकार भी उपहार देती हे।"

"राज्य सरकार इन पर उपहार क्यो देती है ?"

"क्योकि राज्य सरकार को भी इन योजनाओ द्वारा बचत करवाने पर अपनी राज्य की योजनाओ पर व्यय करने को बहुत आसानी से पैसा मिल जाता है। इसी कारण राजस्थान सरकार अपनी योजनाओ को चलाने के लिए विभिन्न प्रकार के उपहार कूपन देती है। बचत मेला भी राज्य सरकार द्वारा ही आयोजित किये गये है। मेले के स्थान पर ही विभिन्न प्रकार के बचत पत्र व कूपन, उपहार कूपन दिए गए। इससे अल्प बचत को बढावा मिलता है।"

"पर यह सब भी एक प्रकार से ऋण ही तो है। क्यो, मै सच कह रही हू, यदि हा तो सरकार इनको किस प्रकार से वापिस लोटाती है ? अर्चना ने पूछा।

"योजनाओ के पूरा होने पर सरकार को उनसे आय होती है। इस आय मे से ही वह पेसा लौटाती हे। कतिपय योजनाए जनकल्याण के लिए भी पूरी की जाती हे। ऐसी योजनाओ से जनता का जीवन स्तर बढता है। राज्य व देश का विकास होता है।"

"हम जेसे बच्चे इस प्रकार की योजनाओ मे कैसे सहायता कर सकते है। बूद बूद कैसे इकट्ठा करे ?"

"विद्यालयो मे सचयिका योजना अल्प बचत को बढावा देने के उद्देश्य से चलाई जा रही हे। इसमे तुम अपने हाथ खर्च से पैसा बचत कर लगा सकती हो। इस प्रकार की वचत पर मिले ब्याज से तुम अपनी गरीब, असहाय सहेली की मदद कर सकती हो। उसे समय पर पाठन पुस्तक, पठन सामग्री आसानी से दिला सकती हो। इसके अतिरिक्त वालक-बालिकाये अपने भावी जीवन के लिए यथा उच्च अध्ययन के लिए अपने पैरो पर खडा होने आदि के लिए, अपने अभिभावको, माता-पिता को अपने नाम पर थोडी-थोडी वचत करने को समझा कर वचत पत्र लेने को कह सकते हे। किसी कारण से मिले नकद उपहार को भी उचित प्रकार की बचत योजना मे लगाया जा सकता हे।"

"ठीक हे। मे अपने जन्म दिन पर मिले रुपयो से वचत पत्र खरीद लूगी। आप मरे रुपयो से यह काम कर देगे न ?"

"हा क्यो नही। मे कल ही तुम्हारे रुपयो से बचत पत्र खरीद दूगा।" मे कुछ ओर वोलता कि अर्चना खाना खाने को उठ गई। और मुझे चुप होना पडा। □

अब तो भई परीक्षा आयी

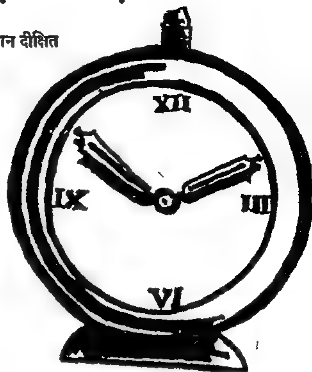
गौरीशकर आर्य

अव तो भई परीक्षा आई, जोर पकडने लगी पढाई।
टीचर जी अब डाट लगाते
कान पकड उठ-वेठ कराते
हमको कहते—"पाठ पढो सव"
और ऊघने खुद लग जाते।
हम हसते हे मन ही मन मे, उनको कोन कहे पर, भाई।
पास-पडौसी जब घर आते
मम्मी-पापा उन्हे विठाते
टी वी खोल देखते वे सब
लेकिन हमको दूर भगाते।
हमसे कहते हे, "आखो को टी वी होता है दुखदायी।"
मीठी नीद सवेरे आती
"उठो, उठो" मम्मी चिल्लाती,
गुड्डू को पालने झुलाती,
और हमारा मुह धुलवाती।
कहती "चलो पढो अव वरना, हो जाएगी अभी पिटाई।
पर जब भी हम पुस्तक खोले
उसमे से भी निदिया वोले—
"सो जाओ मुन्ने राजा" फिर
सिर झुक जाता होले होले।
जाने किसने व्यर्थ परीक्षा की, वच्चो मे रीति चलाई।



आलस छोड़ो कहती घड़ी

हनुमान दीक्षित



टिक-टिक-टिक करती घडी,
आलस छोडो कहती घडी।
प्रात उठकर व्यायाम करो,
सही समय पर काम करो,
देश-समाज का नाम करो
'आराम है हराम।'
चाचा का सन्देश सुनाती घडी,
आलस छोडो कहती घडी।
मुझे देख दफ्तर खुलते,
शाला और शिवाला खुलते,
मिल, कचहरी, बाजार खुलते,
बस, रेल, जहाज चलते।
खुद चलती और चलाती घडी,
आलस छोडो कहती घडी।
धरती चलती, चन्दा चलता,
सूरज चलता, तारे चलते,
ग्रह चलते, उपग्रह चलते,
समय की धुरी पर ससार चलता।
समय अमोल है, कहती घडी,
आलस छोडो कहती घडी।



गंगा मैया का हाथ

राम कुमार ओझा

आज से लगभग अढाई हजार वर्ष पहले मगध देश (वर्तमान विहार) राज्य का राजा नद वडा शक्तिशाली था। यह वह राजा नद था जिसने महान विद्वान तथा राजनीतिज्ञ चाणक्य का अपमान किया था। रुष्ट व्राह्मण ने यह प्रतिज्ञा की कि नदवश का समूह नाश करके ही वे अपनी चोटी की गाठ लगाएगे। कालान्तर मे इन्ही चाणक्य के शिष्य चन्द्रगुप्त ने नद सहित उसके कुटुम्वी-जनो को मार कर मगध के राज्य पर अधिकार किया।

इसी नद की राज्य सभा मे वररुचि नामक एक विद्वान तथा कवि था ओर महान नीतिवान शकटार नद के महामात्य (प्रधानमत्री) थे। कवि वररुचि नित्य राजा की स्तुति मे 108 श्लोक सुनाया करता था और शकटार द्वारा उन श्लोको की सराहना किए जाने पर राजा प्रत्येक श्लोक के लिए एक सोने की मोहर वररुचि को देता। इस प्रकार वररुचि नित्य 108 मोहरे कमा लिया करता था। वररुचि वडा चालाक था, वह शकटार की पत्नी लक्ष्मी को खुश रखा करता ओर पत्नी के कहने से ही शकटार उन श्लोको की प्रशसा करता था। किन्तु शकटार को शीघ्र ही चिन्ता हुई ओर उन्होने प्रधान मत्री के नाते राजकोष का अपव्यय रोकने का उपाय भी शीघ्र ही सोच लिया।

उनके सात पुत्रिया थी। उन सातो की स्मरण-शक्ति वडी विलक्षण थी। पहली पुत्री एक वार मे, दूसरी दो बार मे, इसी प्रकार क्रमश सातवी पुत्री सात बार मे सुने हुए श्लोक को कण्ठस्थ कर लिया करती। उपाय सोच कर एक दिन शकटार ने नद से निवेदन किया, "महाराज ! आप वररुचि को नित्य 108 स्वर्ण मुद्राए किस उद्देश्य से देते है ?"

"मेरा कोई उद्देश्य नही। आप विद्वान हे ओर कविता की समझ रखते है, अत आप श्लोको की सराहना करते है तो मे धन दे देता हू।" राजा ने तुरन्त उत्तर दिया।

राजा उनका सम्मान करता हे, यह जान कर शकटार को प्रसन्नता हुई। किन्तु उन्हे राजकोष की भी रक्षा करनी थी अत वोले "महाराज ! मुझे ज्ञात हुआ हे कि वररुचि

जो श्लोक कहता है वे उसके द्वारा रचित नही होते।" सुनकर राजा को आश्चर्य मे डूबते देख कर शकटार फिर बोले, "यह तो मेरी बेटियो के रचे श्लोक सुनाता है। वे सारे श्लोक उन सातो को कण्ठस्थ है।" और सचमुच अगले दिन वररुचि ने जो लोक सुनाये, वे श्लोक शकटार की पुत्रियो ने दोहरा सुनाए। राजा वररुचि के प्रति बडा नाराज हुआ। उसने मोहरे देनी वद कर दी और वररुचि का राज्य-सभा से निकाल दिया।

अब वररुचि को धन भी न मिलता और जनता की नजरो मे भी वह गिर गया। इस हानि और अपमान का मुख्य कारण उसने शकटार को ही माना। अपनी खोई प्रतिष्ठा फिर पाने और राजा की दृष्टि मे अपने को शकटार से श्रेष्ठ साबित करने का उपाय उसने भी शीघ्र ही खोज निकाला।

वह रोज गगा के कमर तक पानी मे खडा हो कर गगा मैया की स्तुति करने लगा। उसके स्तुति कर लेने के साथ ही एक हाथ गगा से बाहर निकलता और 108 मोहरो से भरी एक थैली दे कर फिर पानी मे डूब जाता। यह कोतुक वह हजारो लोगो की उपस्थिति मे किया करता। बात राजा के कानो तक भी पहुची। उसने शकटार से कहा, "वररुचि पर तो गगा मैया की भी कृपा है। कल प्रात मै स्वय यह कोतूहल देखने जाऊँगा।"

शकटार को विश्वास न हुआ कि नदी भी किसी को धन देती होगी। उनका छोटा पुत्र स्थूलभद्र वडा बुद्धिमान था। पिता की चिन्ता का कारण जान कर वह बोला—"पिताजी आप चिन्ता न करे। यह गुत्थी तो मै सुलझा दूगा।" बालक दिन भर सोचता रहा और रात होते ही गगा-तट की झाडियो मे जा छिपा। उसे विश्वास हो गया था कि वररुचि जरूर रात मे ही कोई प्रपच करता है।

आधी रात से थोडा पहले वररुचि गगा-तट पर आया। वह कन्धे पर लोहे का एक यन्त्र लादे था। वह गगा के पानी मे उतरा और यन्त्र को जल मे स्थापित किया। देखते-देखते गगा के जल से बाहर एक हाथ निकला। वररुचि ने हाथ के साथ एक थेली बाध दी तो हाथ जल मे विलीन हो गया।

तीव्र बुद्धि बालक स्थूलभद्र सारा रहस्य समझ गया। वररुचि के लौट जाने पर बालक जल में उतर कर उसी स्थान पर जा खडा हुआ जहा पहले वररुचि खडा था। उसने पेर के अगूठे की नोक से इधर-उधर टटोला तो अनायास ही उसका पेर लोहे की एक कील से जा टकराया। स्थूलभद्र के पाव तले कील दबी तो यन्त्र पर लगा थैली वाला हाथ जल से ऊपर उठ आया। बालक ने थैली खोली ओर कील पर से पाव हटा लिया। हाथ तुरन्त तिरोहित

हो गया।

अगली सुवह राजा की उपस्थिति में वररुचि पानी मे उतर कर गगा की स्तुति करन लगा। हाथ वाहर निकला, पर हाथ मे थेली न थी। वररुचि वडा शमिन्दा हुआ। वह घवराया भी। तभी शकटार उसके पास पहुच कर वाले – "वररुचि तुमने यन्त्र के साथ जो थैली वाधी थी वह यहा हे। दुनिया की आखो मे थोडी देर धूल झोकी जा सकती है, सदा के लिये नही।" और शकटार ने वालक स्थूलभद्र द्वारा उद्घाटित सारा रहस्य राजा को कह सुनाया। राजा ने क्रुद्ध होकर वररुचि को अपने राज्य से निकाल दिया और स्थूलभद्र को हीरो का एक कीमती हार प्रदान करते हुए वोला – "मुझे चिन्ता थी कि वृद्ध महामात्य शकटार के वाद यह दायित्वपूर्ण पद कोन सभालेगा, किन्तु महामात्य ने तो अपना उत्तराधिकारी आप ही प्रस्तुत कर दिया, ओर राजा नद ने स्नेह से बालक स्थूलभद्र का माथा चूम लिया।



हाथी जी

चैनराम शर्मा

पाव तुम्हारे खभे जेसे
चाल वडी मदमाती जी।

सूड तुम्हारी तोड-तोडकर
मुह मे पत्ते लाती जी।
कभी मरोडे डाल पेड की
या फिर धूल उडाती जी।
मोटी गर्दन अकडी-अकडी
कभी नही वल खाती जी।
जब भी तुम अडियल वन जाते
सब बस्ती घवराती जी।

तुमको केवल इक छोटी-सी
अकुश पाठ पढाती जी।
हमे विठा कर अपने ऊपर
वनो हमारे साथी जी।
आना घर की ओर हमारे,
देगे तुम्हे चपाती जी।
चलना धीरे-धीरे, मेरे
हाथी जी। ओ, हाथी जी।



घमण्डी कौआ

वीणा गुप्ता

किसी अमीर आदमी ने एक काआ पाल रखा था। उसका नाम कालू था। यो तो कोए कोई नही पालता ओर यदि पालने वाला धनी व्यक्ति हो तो क्या कहने ? इसीलिए कालू अपने भाग्य पर इतराता रहता। खाने-पीने की तो कोई कमी थी ही नही। ऊपर से दिन भर मस्ती मारना। वस देखते ही देखते कालू कौए के शरीर पर मास की परते चढ गई। आस-पास के पेडो पर रहने वाले कौए कालू को देखकर अपनी किस्मत को रोते। इधर कालू भी अपनी जाति वालो का उपहास उडाने मे कमी नही रखता।

"अरे, तुम तो मरियल के मरियल ही रहोगे। मुझे यहा जो पकवान खाने को मिलते हे, तुमने तो उनके बारे मे सुना भी नही होगा।" कालू कौए की इस तरह की बाते सुनकर उसके साथी कोए अपना मन मसोस कर रह जाते, करते भी तो क्या बेचारे ?

एक दिन कालू कौए के मालिक को किसी कारणवश समुद्र के किनारे जाना पडा। वह कालू कोए को भी अपने साथ ले गया। कालू इतना बडा समुद्र देखकर हैरान रह गया। "इतना वडा तालाब तो मेने जीवन मे पहले कभी नही देखा।" कालू कोआ अपने आपसे बाते कर रहा था।

"अरे मूर्ख! यह तालाब नही समुद्र हे।"

कालू ने पीछे मुडकर देखा तो एक हस खडा हुआ मुस्करा रहा था। कुछ दूरी पर कई अन्य हस भी धीरे-धीरे उड रहे थे।

"रहने दो रहने दो अपनी अक्ल की बाते, पहले ढग से उडना तो सीख लो। फिर मेरे सामने आकर अपनी चोच खोलना।"

"क्यो भाई, हमे उडना नही आता क्या ? वो देखो, मेरे साथी उड तो रहे है।" कालू कोए की बात सुनकर उस हस ने बडी शालीनता से उत्तर दिया।

"इसे भी कोई उडना कहते है ? मुझे देखो, कितनी ही तरह की उडान भरने की विद्या मुझे आती है। तुम तो बस केवल पखो को ऊपर-नीचे ही करना जानते हो। हू इसे भी कोई उडना कहते है।" हस की उपेक्षा करते हुए कालू ने काव-काव करते हुए कहा।

"हा भेया, हमे तरह-तरह से उडना भले ही न आता हो पर हम अपनी मजिल पर तो

अवश्य पहुच जाते है।

"तुम्हारे बस की बात तो नही लगती यह। मुझसे मुकाबला करो तो जानू। देखे, यह बडा सा तालाब कोन पहले पार कर सकता है ?"

यह सुनकर हस पहले तो मुस्कराया और फिर धीरे से बोलने लगा, "देखो भैया। वैसे तो मुझे मुकाबला करने का कोई शैक नही है, हा यदि तुम जिद करते हो तो यू ही सही।"

इसके बाद उस हस और कौए, दोनो ने ही एक साथ उडान भरी और बीच समुद्र की ओर उड चले। कालू कोए ने तो आव देखा न ताव, बस पूरी शक्ति लगाकर उडना आरम्भ कर दिया। थोडी ही देर मे वह हस से आगे निकल गया। यह देखकर वह खुशी से फूला नही समा रहा था। उधर हस अपनी ही गति से उडे जा रहा था।

हस को पीछडा हुआ पाकर कालू तो जेसे अपने को हीरो ही समझने लगा। तभी उसन तरह-तरह की उडान का प्रदर्शन करना आरम्भ कर दिया। कभी ऊपर जाता तो कभी नीचे आता। कभी कलाबाजिया खाता तो कभी चक्कर खाता उडता, कभी सीधा उडता तो कभी टेढा उडता। मतलब यह, कि कालू कौआ अपनी कला की धाक जमाने मे लग गया।

यो ही कालू कौए की उडने की क्षमता बहुत अधिक नही थी। ऊपर से करतब दिखाने लग गया तो शीघ्र ही उसकी हिम्मत जवाब दे गई और उसकी गति भी धीमी पड गई। तब तक हस कालू के पास आ चुका था।

हस को पास देखकर तो कालू कोआ अपनी रही-सही शक्ति लगाकर उडने लगा। बस ओर उड पाना उसके बस की बात नही थी। अब वह धीरे-धीरे नीचे गिरने लगा। तब उसे अपनी भूल का आभास हुआ। बिना परिश्रम ओर अभ्यास के वह अधिक दूरी तक नही उड सकता था। बेकार मे ही उसने हस के साथ मुकाबला किया।

कालू कोए को नीचे की ओर गिरते देख हस भी उसी की ओर हो लिया। पास आने पर वह कालू को देखते ही उसके मन की बात भाप गया। तभी उसने पास ही उड रहे एक अन्य हस को आवाज लगाई। फिर उन दोनो हसो ने मिलकर कालू कौए को अपने पजो मे पकड लिया और उसे साथ लेकर समुद्र तट की ओर उडने लगे।

तट पर आने के बाद कालू कौए की जान मे जान आई। तब तक उसका घमण्ड पूरी तरह से टूट चुका था। उसने हस से क्षमा मागी और कुछ देर आराम करने के पश्चात् अपने मालिक के घर की ओर उडने लगा। ☐

पुरस्कार

रविदत्त पालीवाल

यशु और देवू दो दोस्त थे। दोनो एक ही स्कूल मे साथ-साथ पढते थे। यशु देवू से अवस्था मे दो वर्ष कम था पर दिखने मे बडा लगता था। यशु बहुत शरारती था लेकिन परिश्रमी होने के कारण वह कक्षा मे हमेशा पहला स्थान पाता था, जिसकी वजह से उसकी मेडम उससे बहुत स्नेह रखती थी।

एक दिन स्कूल से दोनो लौट रहे थे। रास्ते मे मदारी लोगो को तमाशा दिखा रहा था। वे दोनो भी उसे देखने लगे। देवू ने चारो ओर नजर दोडायी कि तमाशा देखने वालो मे उनको कोई जानता तो नही है। उसके बाद उसने अपनी जेब मे से दो बीडियॉ निकाली। एक बीडी यशु को दे दी और दोनो बीडी जलाकर पीने लगे। दोनो बीडी पीते हुये तमाशा देखने मे तल्लीन थे। उधर से उनकी स्कूल मेडम अपने स्कूटर से गुजरी तो उनकी निगाह बीडी पीते हुये यशु और उसके दोस्त पर पड गइ।

धीरे-धीरे करके वह दिन भी आ गया जिस दिन स्कूल मे सभी कक्षाओ के नतीजे निकलते है और अपनी-अपनी कक्षाओ मे पहला स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो को इनाम भी दिया जाता है। नतीजा बताने और इनाम देने का काम भी उन्ही मेडम का था जिन्होने यशु और देवू को बीडी पीते देख लिया था। मैडम ने धीरे-धीरे करके कक्षाओ के नतीजे सुनाने शुरू किये और अन्त मे आठवी कक्षा का भी नतीजा सुनाया, जिसको लगभग उस कक्षा के विद्यार्थी ही नही बल्कि सभी कक्षाओ के विद्यार्थी जानते थे कि यशु ही आठवी कक्षा मे पहला स्थान प्राप्त करेगा। मेडम ने उसका नाम इनाम लेने के लिए पुकारा—यशस्कर। और उसने अखबार मे लिपटा हुआ एक डिब्बा इनाम मे पाया, जिसे पाकर वह बहुत खुश था।

यशु ने घर आकर जल्दी से डिब्बे पर लिपटे अखबार को खोला तो दग रह गया क्योकि उसमे बीडियो के दो-तीन बण्डल और माचिस की डिबिया थी, जिन्हे देखकर वह अपने को बहुत ही लज्जित महसूस करने लगा और उसने मन ही मन कभी भी बीडी न पाने की सोगन्ध खा ली।

यशु को गर्मियो की छुट्टियो के वाद नये स्कूल मे दाखिला लेना था लेकिन स्कूल खुलने के पहले ही दिन वह अपने पुराने स्कूल गया ओर मेडम के पैर छूकर वोला "मने आपके इनाम देने के वाद आज तक वीडी नही पी है, ओर न ही पीऊँगा।" वडा होकर यशु पढ-लिखकर एक डॉक्टर वन गया था। एक दिन उसके क्लीनिक मे हाँफता हुआ एक मरीज आया ओर वोला — "यशस्कर! मुझे वहुत खॉसी आती हे, जरा-सा भी चलूँ, हॉफने लगता हूँ"। नाम लेकर बात करने वाले मरीज को वह अचम्भे से देखने लगा क्योकि शहर के सभी लोग उसे डॉक्टर साहव ही कहकर सम्वोधित करते थे। यशु की चुप्पी देख वह मरीज वोला, "पहचाना नही, मे देवू, तुम्हारा वचपन का दोस्त।" उसके इतना कहते ही यशु उसके गले लग गया। फिर उसकी जाच की, जिसम उसने पाया कि ज्यादा धूम्रपान करने कि वजह से देवू को केसर हो गया था। लेकिन उसने उसे कोई ओर ही मामूली रोग वताकर दवाइयॉ दे विदा कर दिया।

उसके जाने के वाद यशु को लगा कि जेसे उसने अभी-अभी मेडम का दिया इनाम का डिब्वा खोला हो।



उठो! जागो!

बिशनलाल बीरगोता

एक अध्यापक पिता ने अपने विद्यार्थी पुत्र से कहा — 'पुत्र! नित्य प्रात शीघ्र उठा करो। जगाने का काम भी मे ही करता रहूँगा क्या ? पढोगे तुम, ज्ञान अर्जित करोगे तुम, जरा सोचो तो।'

विद्यार्थी पुत्र ने पुन कहा — 'पिताजी! आप मुझे जगा दिया करे।'

'अरे! जगा दिया करे। मै तुम्हे जगा ही तो रहा हूँ। तुम सो क्यो रहे हो ?' पिता नेआश्चर्यचकितहोकर कहा।

बेटा पिताजी के चेहरे को अनिमेष निहारता रहा निहारता रहा और अवाक् हो गया।



नन्हें मेहमान

वासुदेव चतुर्वेदी

पडोसी ने एक पामेरियन नस्ल का कुत्ते का पिल्ला खरीदा था। सफेद रंग का यह पिल्ला बडा खूबसूरत था। अनिल ने जब उसे देखा तो उसके मन मे भी आया कि अगर कही से एक पिल्ला मिल जाए तो मे भी पालूँ। अपने मन की बात घरवालो से वह इसलिए नही कह पाया था कि उसकी बात का अगर घर के किसी सदस्य ने विरोध कर दिया तो पिल्ला पालना तो दूर, लाना भी मुश्किल हो जाएगा।

कुत्ते पालना और उन्हे पढाना आजकल एक प्रचलन हो गया हे। अनिल ने भी सुन रखा था कि कुत्ते पालने वाले लोग बडे होते हे। सम्पन्न लोगो का शोक होता हे अच्छी नस्ल के कुत्ते पालना। उनका यह पशु प्रेम उन्हे आनन्दित करता है। इसलिए उसके मन मे भी कुत्ते का पिल्ला लाने की बात जमी हुइ थी।

ज्योही सर्दी शुरू हुई त्योही उसके पापा ने तो सर्दी से बचाव के लिए कम्बले, शाले, रजाइयाँ आदि खरीदने का काम किया और अनिल ने स्कूटर खरीदने से पहले जरकिन, स्वेटर, कोट, टोप आदि खरीदने का काम किया। सर्दी के मौसम मे यदि मेहमानो का आना लगा रह तो ओढन-बिछाने के सामान की परेशानी तो होती ही हे, साथ ही बजट भी गडबडा जाता हे। अनिल के घर भी दिसम्बर मे मेहमानो का आना लगा रहा। बजट गडबडाया तो स्कूटर नए साल मे लेने का विचार बनाया। जेसे तेसे नए साल के लगते ही वह स्कूटर लने गाँव चला गया। वहाँ से उसने अपने दोस्त से स्कूटर खरीद लिया था।

उसके पडोसी ने जब नया स्कूटर खरीदा था, उस समय उसने विधि-विधान से पूजन कर, गुड-धनियाँ बाट कर स्कूटर घर मे लिया था। उसे देख कर ही अनिल की मा ने भी पूजन कर स्कूटर घर मे लाने के सपने सजो रखे थे।

अनिल जब स्वेटर लेकर आया तो साथ मे ही नए मेहमान और थे। यहाँ पर कहावत चरितार्थ होती थी कि "अधे को न्योता दो और दो को बुलाओ।"हुआ यह कि गाँव मे अनिल को एक पिल्ला पसद आ गया था। उसे लाना था, सो वह अपने भतीजे को साथ लेता आया। स्कूटर तो अनिल चला रहा था और भतीजा पिल्ले को लेकर बेठा था।

स्कूटर जब घर के दरवाजे पर आकर रुका तो अनिल की मम्मी स्कूटर पर बैठे दो नन्हे मेहमानो को देखकर स्कूटर का पूजन करने की बात भूल गई। उसके चेहरे पर झुझलाहट का भाव उभरा। झल्लाते हुए वह बोली—इस नन्हे मासूम पिल्ले को इसकी मॉ से अलग क्यो किया ?तेरे पापा से भी पूछ लेना। वे सेत मेत मे बडे कहलाने के पक्ष मे नही हे। इसे स्कूटर पर लाना था तो अच्छी तरह ओढा कर लाता। देख, बेचारा किस तरह काप रहा हे। स्कूटर पर ठड तो लगी ही होगी। पहले इसे कुछ ओढा, इतने मे इसके लिए दूध तेयार करती हूँ। कहते कहते उसकी मम्मी रसोई घर मे घुस गई।

उसकी मम्मी दूध लेकर आई। कटोरे मे डाला तो पिल्ला लपक कर कटोरे के पास



पहुॅचा। छप-छप की आवाज करता हुआ दूध पीने लगा। देखते ही देखते कटोरा साफ हो गया। उसकी मम्मी के चेहरे पर झुझलाहट के बजाय ममता के भाव थे।

अनिल ने कहा—"देख मम्मी कितनाखूबसूरत गोल- मटोल पिल्ला हे। कितने घन

लम्बे बाल है। ऐसा लगता है जैसे रीछ का बच्चा हो।"

सो तो ठीक है पर अपने घर मे तो हमने कभी कोई कुत्ता पाला नही, फिर तेरे पापा इसे देख कर गुस्से से लाल-पीले न हो जाएँ। तू तो नौकरी पर जाएगा, पर इस अबोध नासमझ के नखरे कौन उठाएगा ? यह गदगी भी करेगा ही। जब तू इसे लेकर आया है तो इसके नखरे भी तू ही उठाना। गदगी भी तू ही साफ करना। उसकी मम्मी ने कहा।

"तू जो कहेगी सब कर लूँगा, पर पिल्ले का ध्यान रखना। इस लेकर पापा नाराज हों तो उन्हे भी मनाना। उसको लगा कि पिल्ला लाकर उसने आफत मोल ले ली है।

उसकी मम्मी ने उसके लिए बिस्तर तैयार कर दिया। खाने-पीने के बरतन भी जुटा दिए। उसकी छोटी बहिन ने पिल्ले के लिए कोट-जाकेट और न जाने क्या-क्या तैयार कर दिए। अनिल उसके लिए चेन ओर पट्टा भी ले आया। ऐसा लगा, सभी ने पिल्ले को परिवार का सदस्य मान लिया, पिल्ला भी अपने उछल-कूद से अपना स्थान बनाने मे लगा हुआ था।

शाम को अनिल के पापा आए तो नए नन्हे मेहमान को देख कर भौचक्के रह गए। वे सोचने लगे—आज तक सभ्यता के अतिक्रमण से वे बचते रहे हे पर नई पीढी ने आखिर फाटक पर खडे रहने वाले कुत्ते के वशज को घर मे प्रवेश करा ही दिया। वह भी परिवार के सदस्य के रूप मे! कहाँ यह बेचारा पेदा हुआ ओर कहाँ आ गया। बडा भाग्यशाली है जो गली-मुहल्ले मे दर दर की ठोकरे खाने से बच गया। हो न हो पूर्वजन्म की बाकियात को इस जन्म मे यह प्राप्त करके ही दम लेगा। उसी समय उन्होने पिल्ले के लिए आधा किलो दूध प्रतिदिन अधिक मगवाने का हुक्म दे दिया।

हुक्म सुनकर अनिल की मम्मी का माथा ठनका। फिर बजट गडबडाएगा। बजट बढने से ही टीनू को भी प्रतिदिन दूध नही दिया जा रहा हे। वह भी तो अपने मम्मी-पापा को छोडकर यहाँ रह रही है। यह तो जानवर हे, फिर उसको पालने के लिए दूध की व्यवस्था आवश्यक हे। यह सोच कर वह चुप रही। उसकी पिल्ले के प्रति ममता थी। चुप रहने का यही तो एक कारण था।

पहली रात ही पिल्ले की 'कूँ कूँ' ने रात की नीद हराम कर दी। जिस जगह उसे सुलाया था, वहाँ अधेरा तो था ही, साथ ही उसे परिवार का कोई सदस्य दिखाई नही

दे रहा था इसलिए उसे अटपटा लग रहा था। जब-जब वह अपनी आवाज ऊँची कर भोकने की कोशिश करता, तब तब गली के कुत्ते उसकी आवाज सुन कर एक ही लय मे भोकने लगते। वह बेचारा सहम जाता। अनिल से नही रहा गया। उसने पिल्ल को ले जाकर पलग पर सुला दिया। बस, फिर क्या था। उसे सहारा मिला, वह सो गया।

वडे सवेरे अनिल की मम्मी ने पिल्ले को नियत स्थान पर न देखा तो मन मे परेशान हो गई। सोचने लगी पिल्ला अगर बाहर निकल गया हो तो कुत्ते उसे मार चुके होगे।

उसने हिम्मत कर अनिल को आवाज लगाई —अनिल, पिल्ला गायब हे। उठकर ढूँढ तो।

"चिन्ता मत कर मम्मी। पिल्ला मेरे पास पलग पर दुबका हे।" अनिल ने लेटे लेटे ही कहा।

"वाहर ला उसे। विस्तर गदा कर देगा।" उसकी मम्मी ने कहा।

"अभी लाया। दूध तेयार कर दे उसके लिए।" अनिल वोला।

मम्मी ने दूध तेयार कर कटोरे मे डाला ओर तू तू की आवाज दी पिल्ला हडवडा कर उठा। पहले टी-टेवुल पर कूदा और फिर धम से कूद कर नीचे उतरा। लपक कर कटोरे के पास पहुँचा और देखते ही देखते कटोरे का दूध पी गया।

दिन भर वह जीतू-टीनू के साथ खेलता रहा। उछल-कूद करता रहा। शाम को उसने टीनू के कपडे के जूते ओर कल्लू के मोजे फाड डाले। कल्लू ने पिल्ले को डॉटते हुए एक चपत लगा दी। पिल्ला ज्योही कल्लू को देखता हे त्योही सहम कर अपनी जगह वेठ जाता हे तथा उसे टुकुर टुकुर देखता रहता हे। वह पलग पर चढने की वार वार कोशिश करता हे तथा थक कर वेठ जाता है। पलग पर विठाते ही वह दोनो टागो को आगे वढा कर सिर छिपा कर वेठ जाता हे।

इतना तो वह जानता हे कि उसे कोन लाया हे। अनिल को देखते ही वह उसके पावो म लोटने लगता ह। अनिल भी उसे प्यार से सहलाता हे। पता नही पिल्ला वोल पाता तो क्या कहता।



संग्रहालय

रामगोपाल 'राही'

सग्रहालय गए देखने सब बच्चे मिल करके।
तरह तरह की वहॉ वस्तुए देखी हॅस-हॅस करके।।

शिलालेख स्तम्भ कई थे, ताम्र-पत्र निराले।
अजब निराले पत्थर टुकडे भूरे कुछ-कुछ काले।।

बर्तन मिट्टी और धातु के देखे कई पुराने।
सोने व चॉदी के सिक्के देखे, लगे लुभाने।।

अजब अनोखे हथियारो से, कमरे सजे पडे थे।
कई कटारो तलवारो के हत्थे रत्न जडे थे।।

बल्लम-भाले-तोपे देखी ओर कई हथियार।
जिनसे युद्ध लडे जाते थे, तगडी उनकी मार।।

आभूषण पोशाके देखी हमने वहॉ पुरानी।
जिन्हे देख के राजाओ की आ गई याद कहानी।।

मूर्तिया थी सुन्दर सुन्दर, देख के मन हर्षाया।
दुर्लभ कई वस्तुए रक्खी लाकर यहॉ सजाया।।

देखे हमने-वहॉ निराले कितने ही अवशेष।
यत्र कई उपकरण पुराने, जिनकी बात विशेष।।

समय वहॉ पर पल मे निकला, हुए नही हम बोर।
देख-देख उत्कठित सब थे, मन था बडा विभोर।।



लालची -बन्दर

महेश चन्द्र जोशी 'मनु'

एक था बडा लालची बन्दर।
जाना पड़ा जेल के अन्दर।।
बडी हे ये दिलचस्प कहानी।
करता था हरदम मनमानी।
एक दिन उसकी हुई सगाई।
घर -घर बाटी खूब मिठाई।
सभी न दी हार्दिक बधाई।
सुखी हा जीवन बन्दर भाइ।
शादी की जब शुभ घडी आई।
सूट पहनकर बाँधी टाई।
दुल्हन के घर बारात जब आई।
बन्दर जी ने शर्त लगाई।।
मुझे चाहिए मारुति कार।
नकद चाहिए साठ हजार।।
इसके लिए यदि हो तेयार।
तब डलवाऊगा मे हार।
लडकी वाला बहुत घबराया।
तभी किसी ने डायल घुमाया।।
फान पे सारा हाल सुनाया।
थानदार तुरन्त ही आया।।
बन्दर के हथकडी लगाई।
बारात बेरग लोटकर आई।।
'मनु ता दगा यही दुहाइ।
लालच बुरी बला हे भाइ।। □



आम तुम्हारे कितने नाम

शिव मृदुल

केसरिया सिन्दूरी पीले,
नीलम दिखते नीले-नीले,
मगर सभी है सरस-रसीले,
हापुस तोतापुरी बदाम।
आम तुम्हारे कितने नाम।।

कलमी चोसा हे हमजोली,
मधुर सफेदा, मधुर सरोली,
रत्नागिरि मे शक्कर घोली,
तुम्हे शहद भी करे प्रणाम।
आम तुम्हारे कितने नाम।।

घर-घर भरते रस के ठॉव,
जाकर नगर शहर हर गॉव,
नही एक भी रखते पॉव,
फिर भी लॅगडा कहें तमाम।
आम तुम्हारे कितने नाम।।

कभी हरे तुम कभी सुनहरी,
कभी तुम्हारा नाम दशहरी,
मगर मित्रता सवमे गहरी,
देशी मिलते हे हर ग्राम।
आम तुम्हारे कितने नाम।।



पक्षी

कुन्दन सिह सजल

नील गगन मे गाते पक्षी।
तारो तक उड जाते, पक्षी।।

ऊँचे पेडो की शाखो पर,
अपना नीड बनाते, पक्षी।।

दाना देख, छोडकर उडना,
धरती पर आ जाते पक्षी।।

बच्चो की खातिर खेतो से,
दाना चुन चुन लाते, पक्षी।।

तूफानो, पानी, ओलो से,
कभी नही घबराते, पक्षी।।

सुबह सुबह ही नीड छोडते।
साझ ढले घर आते, पक्षी।।

भिनसारे मे कलरव करते।
सबके मन को भाते, पक्षी।।

बच्चो, बूढो, युवको सबको
अपनी ओर लुभाते, पक्षी।।

दाना पानी रख पिजरे मे।
अक्सर पाले जात, पक्षी।।



तुम खुशियों के गाना गीत

ओमप्रकाश सारस्वत

सदा भलाई मन मे रख कर
करते रहना परोपकार,
इस तरह दुआएँ पाने से
भई अपना भी होगा उपकार।

कहीं मिल जा अन्धा तुमको
उसकी लाठी का बनो सहारा,
लूले, लगडो, मूक, बधिरो को
प्यारा लागे साथ तुम्हारा।

उन मित्रो की मदद करो
जो हों, पढने मे कमजोर,
गुप चुप मे ये मदद करो
बिल्कुल भी ना करना शोर।

दया भावना मन मे रखकर
जो दु खियो के काम करेगा,
सदा समय की पूजा करके
जग मे ऊँचा नाम करेगा।

देख दूसरो का वढत
तुम खुशिया क गाना गात,
मेहनत करने वाला वढता
यह हे परमेश्वर की रीत।



भारी बस्ता

जगदीश चन्द्र शर्मा

लदा पीठ पर भारी वस्ता,
है वच्चे की हालत खस्ता।

ज्यो-त्यो कर वह पढने जाता,
धीरे-धीरे कदम वढाता,
चाहे विद्यालय समीप हो,
हरदम दूर ही नजर मे आता।

विद्यालय पहुँचानेवाला,
वहुत कठिन लगता है रस्ता।



पीठ दबी रहती हे इतनी,
ओर दबी जाएगी कितनी ?
ज्यो वोझा वढता जाएगा
वह झुकती जाएगी उतनी।

विनय मिला करती विद्या से,
निकला यही तरीका सस्ता।

पढना-लिखना कहा सरल हे।
लगता वह तगडा दगल है,
वालक जीत सकेगा केसे ?
वह उसके आगे निर्वल हे।

वच्चा जिससे नाक सिकोडे,
वह वस्ता केसा गुलदस्ता ?



कौआ और कोयल

नन्दकिशोर 'निर्झर'

एक दिन कौआ गया बाग मे काली कोयलिया के पास।
बच्चे मुझको पत्थर मारे।
लोग डराकर दे दुत्कारे।।
जहॉ जहॉ भी मे जाता हूँ।
प्यार नही घृणा पाता हूँ।।
मे भी काला तुम भी काली।
पर यह दुनिया बडी निराली।।
तुम्हे प्यार से पास बुलाती।
मुझे मार कर दूर भगाती।।
ऐसा क्यो हे ? मेरी बहना! पूछा होकर दु खी उदास।।
कौए भैया, कोयल बोली ।
ज्यू कानो मे मिश्री घोली ।।
मे भी काली तुम भी काले ।
पर सब जाने दुनिया वाले ।।
कडवा हे तेरा काव काव ।
भटको तुम चाहे गॉव गॉव ।।
यदि हम मीठे बोल उचारे ।
तो लगते सबको ही प्यार ।।
अब से कडवे बोल छोड दो, मत हो अधिक निराश ।।



एक कहानी जंगल की

जगदीश जोशी

बन्दर, बकरा, बारहसिघा,
हरिण, नीलगाय ओर मेढा।
कुत्ता, बिलाव, नेवला, उल्लू,
गिद्धराज, कछुआ और गेडा।

भालू, चीता, बाघ, लोमडी,
हाथी, गीदड ओर खरगोश।
जगल के इन वासिदो के,
मन मे था पूरा सतोष।

प्रधानमत्री वनराज शेर,
नये चुनावो से आया।
जानवरो के दु ख दर्दो को,
कभी न वो बॅटा पाया।

तपती धरती पुकार उठी तो,
सूर्य बादलो से हारा।
बिजली कडकी बादल गरजे,
फूट पडी जल की धारा।

नदी किनारे छोड चली,
और बस्ती मे विप्लव छाया।
डूबे भवन झोपडे सारे,
जन्तु जगत तब घबराया।

दौडे गये राज महल तक,
पर प्रहरी ने सबको रोका।
वनराज शेर ने की दहाड,
और आकर के सब को टोका।

राजा बोला, यह राजमहल है,
नही गरीबों का छप्पर।
तुम सब के गन्दे पॉवो स
बिगड जायेगा मेरा घर।

राजगुरु था राज हस,
वह उडकर तभी वहाँ आया।
नीति निपुण वचनो से,
उसने सिह राज को समझाया।

वह बोला—राजन् प्रजातन्त्र है,
यह महल न केवल तुम्हारा है।
अपने खून पसीने से इन
सबने इसे सवारा है।

शासक का प्रथम कर्त्तव्य
प्रजा को सकट से बचाना है।
जिनके बल से तुम शासक हो
क्यो उन्हे न तुमने पहचाना है।

समझ गया वनराज शेर
सबका स्वागत सत्कार किया।
नाव खोल कर निकल पडा।
हाथों मे चप्पू थाम लिया।

बहता हुआ उसे जब कोई
जीव-जन्तु दिख जाता था।
खीच हाथ से उसे तभी वह
अपने साथ बिठाता था।
□

ऐसा मेरा वतन

कमरुद्दीन असारी राज

सारे जग में जो महका वो मेरा चमन
जिसको जाने जहा ऐसा मेरा वतन।

ऊचे पर्वत जहा पहरेदारी करे
जिसकी सीमा पे आने को शत्रु डरे
धोए दिन रात सागर भी जिसके चरन
ऐसा मेरा वतन, ऐसा मेरा वतन।

जिसके मोसम सुहाने हसी वादिया
लहलहाते जहा फूल, फुलवारिया
ठडी ठडी जहा चलती रहती पवन
ऐसा मेरा वतन, ऐसा मेरा वतन।

जिसके जगल घने बहते झरने हसी
धान के खेत, सोना उगलती जमी
जिसकी गोदी मे बहती है गगो-जमन
ऐसा मेरा वतन, ऐसा मेरा वतन।

हर दिशा है जहा लहलहाती फसल
जिसकी झीलो मे हसते हुए है कवल
जिसकी बगिया मे खिलते अनोखे सुन
ऐसा मेरा वतन, ऐसा मेरा वतन।

गूजी सन्तो की वाणी सदा ही जहा
तुलसी नानक, रहीमन, से सानी कहा
जिसकी धरती पे मीरा ने गाए भजन
ऐसा मेरा वतन, ऐसा मेरा वतन।

जो अमन का पुजारी रहा है सदा
जो उसूलो से पीछे ना हरगिज हटा
जिसने चाहा सदा 'राज' जगमे अमन
ऐसा मेरा वतन, एसा मेरा वतन 

रामू की राय

ओमदत्त जोशी

एक गॉव मे दो दोस्त रहते थे । एक का नाम श्याम और दूसरे का नाम रामू । दोनो मे गहरी मित्रता । दिन उगते ही जव तक श्याम रामू को और रामू श्याम को नही देख लेते तव तक चैन नही पडती थी । दोनो एक ही कक्षा मे पढते थे । वे हमेशा साथ साथ विद्यालय मे जाते । रामू का घर पाठशाला की तरफ ही था परन्तु श्याम का घर कुछ दूरी पर था । इसलिए श्याम जल्दी खाना खाकर अपना वस्ता लेकर, रामू के घर आ जाता था । दोनो साथ-साथ पाठशाला जाते ओर शाम को छुट्टी होने पर साथ-साथ घर आते ।

एक दिन की बात है । श्याम कुछ जल्दी ही रामू के घर आ पहुँचा और बरामदे मे देखा तो रामू अभी मुँह ही धो रहा था ।

श्याम ने कहा— "अरे । अभी तक स्कूल के लिए तैयार ही नही हुए ओर एक मै हूँ कि सब कामो से निबट कर तेरे घर आ गया हूँ ।"

श्याम की वात सुन कर रामू मुस्कराया । आलमारी मे रखी घडी दिखा कर कहने लगा— "देख । इस घडी मे ऑख खोल कर देख वच्चू । अभी तो साढे नो ही वजे है, इतनी जल्दी क्या है । पूरा एक घण्टा पडा हे । जल्दी जा कर वहॉ धूमामस्ती करने से क्या लाभ । बेकार मे कपडे गदे करवाने ओर फडवाने से क्या मतलब । कल देखा नही, उस नित्यानन्द के नये के नये कपडे केसे फट गये थे । वेचारे को जल्दी घर वापस जाना पडा, कपडे वदलने के लिए । उसको पापा-मम्मी की कितनी डॉट सुननी पडी होगी । यदि ऐसी हालत तुम्हारी हो जाय तो नानी याद आ जायेगी किसी दिन ।"

श्याम ने हँस कर वात टालते हुए कहा— "मेरी क्यो हो जाय ऐसी हालत । म तो अपने ढग से खेलता हूँ ओर रही चलने की वात, तो इसमे क्या है ? तुम कहोगे तव ही चलेंगे स्कूल । लेकिन मेरा मन तो फालतू वैठने मे नही लगता हे, कुछ भाग दौड, मोज मस्ती तो होनी ही चाहिए, गवदू की तरह वेठे रहने ।"

रामू वीच मे ही वोल पडा— "अरे भाई । मोज-मस्ती, भाग-दोड करनी है तो शाम को खेल के समय खूव किया करो, कोन मना करता हे ? अभी पाठशाला जाते समय

ठीक नही है। शाला की ड्रेस गदी हो जाती है। दिन भर गदे कपडो मे रहना मुझे अच्छा नही लगता। बैठकर पाठ याद करो।"

श्याम ने वात को मानते हुए कहा—"हॉ भाई रामू ! बात तो तुम्हारी सो पैसे सच है। भविष्य मे कभी पाठशाला जल्दी चलने के लिए नही कहूँगा। बम ठीक है न।"

श्याम रामू से चचल था। धूमामस्ती करने मे उसे बडा मजा आता था। परन्तु रामू बहुत सुशील एव पढाई मे होशियार था। उसे फालतू बाते करना अच्छा नही लगता था। वह समय का सदुपयोग करता था। वह हमेशा श्याम को समझाता रहता था कि हमको अच्छे कार्य करने चाहिए। अपना समय बेकार के काम मे नही लगाना चाहिए। खूब मन लगा कर पढना चाहिए। बिना काम इधर उधर नही भटकना चाहिए।

विद्यालय मे एक दिन दोपहर की छुट्टी के समय सब छात्र कक्षा के बाहर खाना खाने चले गये। श्याम कक्षा मे ही कुछ लिखने का बहाना कर रहा था। रामू उसका इन्तजार बाहर कर रहा था। जब श्याम नही आया तो रामू उसे बुलाने कक्षा मे गया। श्याम को काम करते देख बोला—"अरे श्याम ! खाना खाने की घण्टी कभी की लग चुकी है। देखते नही, कक्षा के सब लडके खाना खाने चले गये है। मै भी तुम्हारी बाहर इन्तज़ार कर रहा था। जव तुम नही आये तो मै तुम्हे सम्भालता हुआ यहाँ आ गया हूँ। अव अकेले कक्षा मे क्या कर रहे हो ? उठो ! चलो खाना खाते है ।"

श्याम बीच मे ही बहाना बनाते हुए कहने लगा—"यार रामू ! मुझे सामाजिक ज्ञान का काम करना है। अभी छट्ठा घण्टा आ जायेगा और अधूरे काम से मुझे मार पडेगी। आज मुझे भूख भी नही है, तुम जाकर खाना खा लो।" वह वापस कॉपी मे लिखने लगा।

रामू अनमने मन से कक्षा के वाहर चला गया। बात वास्तव मे यह थी कि आज श्याम के पास कक्षा मे बैठने वाला छात्र दिनेश एक नया पेन लेकर आया था। पेन वहुत सुन्दर था। पहले घण्टे मे जब दिनेश ने श्याम को बताया, तभी से श्याम उसे चुराने की सोचने लगा। अहा ! कितना सुन्दर पेन है, यदि यह पेन मे ले लू तो कैसा रहे ! अव वह उसे लेने के लिए दोपहर की छुट्टी का इन्तजार करने लगा। खेल की छुट्टी का समय मिल गया। अब वह पेन चुराना चाहता है।

रामू ने सोचा कि आज जरूर कोई न कोई ऐसी बात है जिससे श्याम कक्षा को छोडकर वाहर नही आ रहा है। अत उसने जल्दी-जल्दी टिफिन खोला, अचार के साथ

दो पराठे खाये हाथ-मुँह साफ कर पानी पीया। अपनी कक्षा की पीछे वाली खिडकी मे से चुपके-चुपके श्याम को देखने लगा। इधर कक्षा म सुनसान देख, श्याम ने अपने पडौसी दिनेश के वस्ते मे से पेन निकालने लगा। सयोग से उसी समय रामू ने खिडकी मे से उसे देख लिया और दौडकर कक्षा के कमरे म आया। वह गुस्से मे आग ववूला होकर श्याम का बुरी तरह फटकारन लगा— 'श्याम ! तुम यह क्या कर रहे हो ? तुम्हे थोडी-बहुत भी शर्म नही आती हे क्या ? चोरी करना महापाप हे। अगर तुम ऐसा करोगे तो म तुम्हारा दोस्त नही रहूँगा। ऐसी गदी आदत मुझे अच्छी नही लगती। पेन चुराने क लिए तुमन कैसा लिखाइ का वहाना बनाया ! लेकिन मे भी तुम्हारा गुरु हूँ, तुम्हे रगे हाथो पकड लिया। तुम्हे पेन की जरूरत थी तो मुझे क्यो नही कहा। मेरे पापा कल ही लेकर आये हे। मेरे पास दो पेन हे। एक तुम्हे दे देता। किसी दूसरे की चीज विना माँग लेना भारी अपराध हे। मुझे कतई पसद नही हे।"

श्याम का सिर शर्म से नीचे झुक गया। उसकी चोरी पकडी गई। उसकी जवान के ताला लग गया। फिर भी वह रुधे गल से माफी मागत हुए बडी मुश्किल से बोला— "रामू भैया ! मुझे माफ कर दो। नये पेन को देखकर मेरा मन ललचा गया। मे अपने आपका नही राक सका। पेन का चुराने के लिए मेन झूठा वहाना बनाया। अव मे कभी भी एसा बुरा काम नही करूँगा। रामू मै तुम्हे पूरा विश्वास दिलाता हूँ।" कहता हुआ श्याम सिसकिया भरने लगा।

रामू ने उसे गल लगाते हुए कहा— "वाह भाई श्याम ! तुम्हे माफ किया। सुवह का भूला यदि शाम को घर आ जाता हे तो उसे भूला नही कहते।"

रामू की वात मान लेने पर वह प्रसन्न हो गया। दोनो दोस्तो मे फिर पहले जैसा प्रेम हो गया। अव श्याम रामू की तरह मस्तिया कम मारने लगा, पढाई मे ज्यादा ध्यान देन लगा। दोनो खूब मन लगा कर रोज का पाठ रोज याद करने लगे। इसका फल यह हुआ कि वार्षिक परीक्षा मे दोनो प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए।



वसंत

रमेश मेहता

देखो प्रकति का मृदुल प्यार।
कण को कण से हुआ प्यार।
खोला वसत ने हृदय द्वार।
आया वसत कर नव शृगार।

कलरव स्वर और मीठी कूजे।
सर्वत्र व्योम मे अब गूज।
ऋतुराज का स्वागत करन को।
हर हृदय ने खोले आज द्वार।

सदेश यही देता सौरभ।
रे प्राण सभी को तू और अब।
बन जा सुमन, मालिन्य त्याग।
कर ले, कर ले तू सब से प्यार।

शोणित से प्यास नही बुझती।
अग्नि से माग नही सजती।
करुणा के सागर मे ही तो।
करते प्रकृति और पुरुष प्यार।

हर प्राण सम्पदा है प्रभु की।
यह पूजा बन जाती जिसकी।
वह हृदय वसत का आगन है।
यह है रचनाकर का त्यौहार।



वच्चों का गीत

तेजपाल शर्मा

कितना सुन्दर कितना प्यारा, हरा भरा स्कूल हमारा।
घर से भी अच्छा यह घर है, ज्ञान दीप की ज्योति अमर है।
मुन्नू आओ, चुन्नू आओ खालिद टॉमस को भी लाओ।
खेल-खेल मे पाठ पढेगे नही किसी से कभी लडेग।
सस्नी अच्छी शिक्षा पाए अपने गुरु को शीश नवाए।
मरी 'मेडम वडी चतुर है, ज्ञान दाता मेरे 'सर' है।
गुरुजी मे हम पढने जाए जीवन मे न कभी दुख पाए
आओ चले स्कूल हमारे, अनपढ रहे न मित्र हमारे।



कड़ी दोपहरी

विजेन्द्र कुमार शर्मा

कडी 'दोपहरी' दया, देया। लगी हापने कजरी गेया।
भूल गई आगन मे चुगना, छाव खोजती फिरे चिरैया।
सूने पनघट, जल का सकट, रीत गई वावा की कुइयाँ।
'लू' के हमले, सूखे गमले, सीच-सीच कर हारी मैया।
पखे-कूलर, चलते दिनभर, विजली का 'बिल' वढे रुपैया।
सूखी पोखर, नदी-सरोवर, गुमसुम पडी रेत मे नैया।
वरगद दादा, नेक इरादा, चोपायो पर करते छइया।
ना जाने कव धूप टलेगी, चले दोपहरी 'पा-पा पइया'।



गर्मी ने ललकारा

शिवनारायण शर्मा

सर्दी से सिकुडी धरती को
भीषण गर्मी ने ललकारा,
कल तक था जो सूर्य सलोना,
लगता आज प्रबल अगारा।
तीर चलाती थी बर्फीले
कण-कण को जो खूब कपाती,
वही हवा लू की लपटे बन
वसुधरा को खूब तपाती।
छाव बडी प्यारी लगती है
उजडा-सा लगता गुलशन है,
नदिया, झरने खूब लुभाते
वस्त्र बने तन के दुश्मन है।
आइस्क्रीम मजे से खाते
लाला ले लेकर चटखारा,
सर्दी से सिकुडी धरती को
भीषण गर्मी ने ललकारा।
कोयल कूके बैठ आम पर
चमगादड अपना तन नोचे,
बजी मक्खियो की शहनाई
बजे मच्छरो के अलगोजे।
कूलर-पखे देते राहत
लीची-आम-पपीते भाते,
तरह-तरह के शर्बत मानो
सारी गर्मी दूर भगाते।

कछुए जेसी चलता चाले
जेसे यह नभ का वजारा,
सर्दी से सिकुडी धरती को
भीषण गर्मी न ललकारा।

□

गर्मी का मौसम

मोहन सिंह

गर्मी का मोसम हे आया
ठडा पानी सब को भाया,
शरीर पसीने से अब तर हे,
गर्मी अब लगती दिन भर हे।
शर्बत ओर ठडाई भाती,
'कूलर' की अब हवा सुहाती
बाहर निकलने मे डर लगता,
घर के अन्दर ही मन लगता।
पक्षी वेचारे पेड खोजते,
पशु अब सारे छाह खोजते,
बैर भाव अपने भुलाकर,
दोपहरी मे पास वेठते।
आख मिचौनी विजली करती,
दोपहरी काटे नही कटती,
बडी मुश्किल से सध्या आती,
और यह सबके मन को भाती।
ताल, तलेया सूख रहे हे,
बाग बगीचे सूख रहे है,
सब चाहते है, वर्षा आये,
गर्मी से सबको त्राण दिलाये।

□

वर्षा आई

जयन्त निर्वाण

रिमझिम रिमझिम वर्षा आई। निर्मल शीतल पानी लाई।
ताल तलैया भर जायेगे। हिलमिलकर बालक आयेगे।
कागज की नाव चलायेगे। नाच-कूद मोज मनायेगे।
शीतल मद चले पुरवाइ। रिमझिम रिमझिम वर्षा आई।
धरती की शोभा हे न्यारी। गाये ची ची चिडिया प्यारी।
टर्राए मेढक राते सारी। मोर नाचते छत्तरधारी।
किसानो में खुशी है छाई। रिमझिम रिमझिम वर्षा आई।



टीवी

महेश पारीक 'सुदर्शन'

रोज सवेरे मधुर राग मे, 'वन्दे मातरम्' गाता टीवी।
देश विदेश की खबरो से, हमे खबरदार करता टीवी।।
कहानी, नाटक, गीत, कविता से, हमारा मनोरजन करता टीवी।
हर कक्षा के पाठ पढाकर, हमारा शिक्षण-करता टीवी।।
सुन्दर सुन्दर तरीके अपनाकर, सबको साक्षर करता टीवी।
एक ही पर्दे पर लाकर दुनिया को, हमारा ज्ञान बढाता टीवी।।
महापुरुषो के जीवन दर्शन से, अच्छे पाठ पढाता टीवी।



चींटी

दीपचन्द सुथार

चीटी कितनी छोटी है,
फिर भी प्यारी लगती है।
दिन-रात चलती रहती,
श्रम से कभी न थकती है।

हिम्मत इसकी भारी है,
लगन वडी निराली है।
जिस कार्य मे जुटती है,
पूरा कर दम लेती है।

मिल-जुल कर वह रहती है।
पक्ति वना नित वढती है।
पग पग नेह की ज्योति जला
सवका मन वह हरती है।

अनुशासन इसको प्यारा है,
भरा जीवन सारा है।
प्रेरित होकर वढते रहना,
परम कर्त्तव्य हमारा है।

☐

मकड़ी

शादीलाल गम्भीर

मकडी रानी, ओ मकडी रानी, अपनी सुनाओ तुम राम कहानी ।
लोग तो तुम्हे बुरी कहते हे, मुझे तुम अच्छी लगती हो ।
आहार तुम केसे करती हो, और केसे करती हो विश्राम ?
गिर-गिर कर फिर चढती हो, क्या नही सताती तुम्हे थकान ?
ताना-बाना देख मे सोचूँ, क्या होगा कोई तुम्हारे जेसा ?
पतला और पारदर्शी कपडा सा, बुनकर बना सकेगा ऐसा ?
तुम तो विचित्र बुनकर हो, कच्चा धागा तुमने पाया कैसे ?
हथकरघा तुम लाई कहॉ से, क्या लघु उद्योग चला बिन पेसे ?
क्या उपयोग तुम्हारे श्रम का, मुझे तनिक तो बतलाओ ।
सीख सके अगर यह मानव, खुले मन सबको समझाओ ।
वस्त्र हमारी रक्षा करते, गर्मी, सर्दी, बरसात से ।
तन को कोई हानि न पहुँचे, दुश्मन की काली चाल से ।
मै भी अपना ताना-बाना बुनकर, शत्रु से स्वय को बचाती हूँ ।
जाल के अन्दर जो फॅस जाए, खाकर अपनी भूख मिटाती हूँ ।
मै तो सदा श्रम करती हूँ, बुरी कहो या कहो अच्छी ।
उसको जग मे यश मिलता हे, जिसकी लगन हो सच्ची ।



आओ भाई पढ़ना सीखें

देवेन्द्रनारायण पालीवाल दुकूल

आओ भाई। पढना सीखे ।
पोथी वॉचे, लिखना सीखे ।।
समझ बूझ कर करो दस्तखत ।
पढना-लिखना सीखे हम खत ।।
नही दिखाये कभी अगूठा ।
जिससे वनिया लूटे झूठा ।।
पढ न सके फर दे हस्ताक्षर ।
काला अक्षर भैस बरावर ।।
इस दस्तखत से भला अगूठा।
विना पत्तियॉ पेड है ठूठा ।।
जन्म लिया तब पशु समान।
वोली सीख बने इन्सान ।।
पढ लिख कर बन जाये भगवान ।
साक्षरता का गाये गान ।।



आओ पेड़ लगाएं

नटवर पारीक



धरती जीवन दाता,
हम सबकी यह माता।
अपना फर्ज यही है,
माँ का कर्ज यही है।
इसको आज बचाए।
आओ पेड लगाए।।

जब कटते है जगल,
होता घटित अमगल।
बिन वर्षा के सावन,
कैसे हो मनभावन ?
बादल फिर मडराए
आओ पेड लगाए।

सूखी-बजर माटी,
नगे पर्वत-घाटी।
सबकी यही है पीडा,
कौन उठाए बीडा ?
हरियाली छा जाए।
आओ पेड लगाए।।

वन मे शोर नही है,
कोयल-मोर नही है।
घर विहीन ये सारे,
है भयभीत बेचारे।
पछी फिर से गाए।
आओ पेड लगाए।। □

पेड़

गुलाम मोहम्मद 'खुर्शीद'

हरे-भरे लहराते पेड
सबका मन हर्षाते पेड ।
बाहो मे ले ले कर अपनी
हमको खूब झुलाते पेड ।
धरती की गोदी मे उगकर
सुन्दर इसे बनाते पेड ।
परहित मे ये लगे हुए है
फल ओर छाया देते पेड ।
अग-अग उपयोगी इनका
रोजी-रोटी देते पेड ।
आओ बच्चो काम करे इक
रोपे ओर पनपाए पेड ।



पेड़

कमलेश शर्मा

आधी तूफान मे डटे रहो
यह पेड हमे सिखलाते है
पतझड मे पत्ते झड जाते
फिर भी ये मुस्काते है
पतझड बाद बसन्त जब आये
डाल-डाल हरियाली छाये
ढेरो फल इन पर लग जाते
फिर भी ये झुक जाते है
पेड हमारे जीवनदाता
इनसे जन्म-जन्म का नाता
भेदभाव नही सग किसी के
शीतल छाव लुटाते है





पेड़ लगायें

करणीदान बारहठ

आओ बच्चो पेड लगाये
सुन्दर सुन्दर पेड लगायें।
प्यारे प्यारे पेड लगाये
पेड लगाये पेड लगाये।

नीम, पतीता, आम सरोली,
नीम्बू, कीकर, पीपल रोली।
बेरी और बबूल सफेदे,
मेहदी, केली और चमेली।

बबलू अब तुम खड्डा खोदो,
बादल बरसे, कस्सी लाओ।
खाद डाल दो नीमा दीदी,
नीरू तुम अनार लगाओ।

धरती को शृगार कराये
आओ बच्चो पेड लगाये।

मेरी धरती सूनी सूनी
मेहनत होगी दूनी दूनी।
गोविन्द आओ, अस्लम आओ
पेमा आओ, आओ चूबी।

बगिया होगी, बाग बनेगे
ऊंचे-ऊंचे रुख उगेगे।
हरी भरी होगी माँ धरती,
पछी मीठी राग करेगे।

पूरी धरती को महकाये।
आओ बच्चो पेड लगाये।

कोयल कोअे मोर पपीहा,
मीठे-मीठे गीत सुनाये।
जगह-जगह फूलो की क्यारी
सुमन सलोने खूब हँसाये।

नीम्बू तोडो, आम खिलाओ।
तुम अनार के दाने लाओ।
कितना मीठा हुआ सन्तरा,
खाओ पीओ मौज बनाओ।

मेरी धरती धन बरसाये।
आओ बच्चो पेड लगाये।
सुन्दर सुन्दर पेड लगाये।
पेड लगाये, पेड लगाये।



सुन्दर-वृक्ष

गोपाल कवेरिया

सुन्दर सुन्दर वृक्ष खडे है
कुछ छोटे तो कुछ वडे है ।
कुछ पर पत्तियाँ हरी हरी है,
कुछ पर पत्तियाँ सूखी हुई है ।
वसन्त का स्वागत करने को
देखो इनमे होड मची है ।
हर मोसम मे यह डटे हुए है,
अटल अडिग यह खडे हुए है ।

अगणित पक्षी इन पर पलते,
आधी वर्षा सब कुछ सहते ।
कुछ आते है, कुछ जाते है,
डेरा अपना कही बनाते ।
नही वेदना इनको देखो,
अटल अडिग यह खडे हुए है ।
सुन्दर सुन्दर वृक्ष खडे है
कुछ छोटे तो कुछ वडे है ।

थका मुसाफिर वेठ छाव म,
पल दो पल सुस्ताता है ।
सूरज की गर्मी से वचने,
यही शाति वह पाता है ।
कुछ इसा ऐसे भी होने,
काट गिराते इन वृक्षो को ।
नही शिकायत करते फिर भी,
अटल अडिग यह खडे हुए है ।
सुन्दर सुन्दर वृक्ष खडे है,
कुछ छोटे तो कुछ वडे है । □

सम्पर्क सूत्र

(1) दीन दयाल शर्मा 7/101 आर० हच० बी० , हनुमान सगम (श्रीगगानगर)
(2) शीताशु भारद्वाज 130 विद्या विहार, पिलानी
(3) श्यामसुदर तिवाडी मधुप B-127-H राधाकृष्णन् नगर, भीलवाडा
(4) मायामृग किराना भवन मार्ग, हनुमानगढ (श्रीगगानगर)
(5) भोगीलाल पाटीदार रा उ मा वि , सीमलपुर डूगरपुर
(6) सागरमल शाह वरिष्ठ व्याख्याता, डाइट, डूगरपुर
(7) निशात वार्ड 14, वन विभाग के पास, पीली बगा (श्रीगगानगर)
(8) चमेली मिश्र उपप्रधानाचार्या, रा उ मा वि , सुमेरपुर, पाली
(9) रमेश भारद्वाज 4112 चोकडीवालो का मोहल्ला, नसीराबाद, अजमेर
(10) सतीशकुमार उप प्रधानाचार्य, डाइट, आबू पर्वत, (सिरोही)
(11) सत्यनारायण सोनी रा प्रा वि , रामगढ, तहसील-नोहर (श्रीगगानगर)
(12) जमनालाल बायती जि शि अ, शिक्षा निदेशालय, बीकानेर
(13) अरनी रार्वट्स पो आ रोड, भीमगजमडी, कोटा- 2
(14) बजरग लाल जेठू व्याख्याता, रा उ मा वि जसवतगढ (नागोर)
(15) जितेन्द्र शकर बजाड भीचोर (चित्तोडगढ) 312022
(16) छीतरलाल साखला रा अ प्रा वि फतेहपुर, पो आ लाख सनीजा, तह-दिगोद (कोटा)
(17) नमोनाथ अवस्थी रा उ प्रा वि डोरावली (सवाईमाधोपुर)
(18) रामजीलाल घोडेला द्वारा-कृषि उपज मडी समिति, लूणकरणसर, (बीकानेर)
(19) बृजभूषण चतुर्वेदी 'वृजेश' रा उ प्रा इव मूडला बिसोती, बारा-325205
(20) मन्दाकिनी काले व अ , रा बा उ मा वि , बासवाडा
(21) भगवती लाल व्यास 35 खारोल कालोनी फतेहपुरा, उदयपुर
(22) हरिवल्लभ बोहरा 'हरि' 4087 सिघवी पाडा, जेसलमेर
(23) शिवचरण मत्री जि शि अ बडी का बास, किशनगढ (अजमेर)
(24) गौरीशकर आर्य कवि कुटीर, चोमहला-326515 (झालावाड)
(25) हनुमान दीक्षित प्र अ , रा उ प्रा वि न 1, नोहर (श्रीगगानगर)
(26) रामकुमार ओझा बुद्ध विहार, नोहर
(27) चेनराम शर्मा पो चन्देसरा वाया खेमली (उदयपुर)

(28) वीणा गुप्ता श्रीराम विद्यालय उद्योगपुरी, कोटा-324004
(29) रविदत्त पालीवाल गायनका सी सै स्कूल दूढलोद-333702
(30) बिशनलाल वीरगोता रा मा वि मीमलिया, तहसील-चाकसू (जयपुर)
(31) वासुदेव चतुर्वेदी एस आई इ आर टी उदयपुर
(32) रामगापाल राही रा उ प्रा वि बावई वाया इन्द्रगढ (बूदी)
(33) महेशचन्द्र जोशी 'मनु' रा मा वि , कन्नोज, चित्तोडगढ
(34) शिव मृदुल बी- 8 मीरानगर, चित्तोडगढ
(35) कुन्दन सिह सजल उदय निवाम, रायपुर (पाटन) सीकर
(36) जगदीश चन्द्र शर्मा रा मी उ मा वि , पो गिलूण्ड, राजसमद 313207
(37) नद किशोर निर्झर ग मा वि सिधपुर, चित्तोडगढ
(38) जगदीश जोशी रा उ मा वि , कपासन, चित्तोडगढ
(39) ओमप्रकाश सारस्वत उप जि शि अ शिक्षा निदेशालय बीकानेर
(40) कमरूद्दीन असारी राज अजमेरीगेट, बेगू, चित्तौडगढ
(41) ओमदत्त जाशी रा प्रा वि , ओडान चौक, ब्यावर (अजमर)
(42) रमश मेहता रा उ प्रा वि , शेखावाटियो का घेर, नई बगीची, जयपुर
(43) तेजपाल शर्मा रा महाराजा आदर्श उ पा वि , जयपुर
(44) शिवनारायण शर्मा, रा मा वि , कावग, दरीवा माइन्स, राजसमन्द
(45) बिजेन्द्र कुमार शर्मा रा प्रा वि , कुग्गाव, सवाईमाधोपुर-322255
(46) मोहन सिह विक्रम सदन टिब्बी, श्रीगगानगर
(47) जयत निर्वाण कुमकुम पब्लिशिग हाउस, सरदार शहर (चूरू)
(48) महेश पारीक 'सुदर्शन' रा मा वि , सागरिया वाया कोठिया (भीलवाडा)
(49) दीपचद सुथार रा मा वि मेडता शहर, नागोर
(50) शादीलाल गभीर रा प्रा वि , श्रीपुरा 1, कोटा
(51) देवेन्द्र नारायण पालीवाल 'दुकूल' रा मा वि , लोसिग वाया बडगाव, उदयपुर
(52) नटवर पारीक श्री शारदा ज्ञानपीठ, डीडवाना, नागोर-341303
(53) गुलाम मोहम्मद 'खुर्शीद' रा मा वि , सामणा, नागौर
(54) कमलेश शर्मा राष्ट्रउन्नति विद्यालय, वार्ड 8, नई खुजा, हनुमान गढ सगम
(55) करणी दान बारहठ फेफाना (श्रीगगानगर)
(56) गोपाल कनेरिया रा मा वि पडासली, राजसमद